POETRY CORRESPONDENCE AND TRANSLATION
HIN2 A08 (2)

COMMON ADDITONAL LANGUAGE IN HINDI

FOR

B.COM/BBA

SECOND SEMESTER

CBCSS
(2019 Admission onwards)

UNIVERSITY OF CALICUT
SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION
Calicut Univeristy P.O, Malappuram – 673 635.

19106

UNIVERSITY OF CALICUT
SCHOOL OF DISTANCE EDUCATION

SELF LEARNING MATERIAL

B.COM/BBA
COMMON COURSE IN HINDI
SECOND SEMESTER

POETRY CORRESPONDENCE AND TRANSLATION

HIN 2 A08 (2)
(2019 Admission onwards)

Prepared by :

Module I & II :
DR. VINEETHA T.N.
Assistant Professor in Hindi (On Contract)
School of Distance Education
University of Calicut

Module III& IV :
DR. PRASEEJA N.M.
Assistant Professor in Hindi (On Contract)
School of Distance Education
University of Calicut

Scrutinized by :
DR. R.SETHUNATH
Prof.Dept of Hindi
University of Calicut

CONTENTS

Module –I

- कबीरदास - दोहे
- सूरदास - पद
- सुमित्रानंदन पंत - नौका विहार
- सूर्यकांत त्रिपाठी निराला - जुही की कली
- अज्ञेय — नाच

Module –II

- अनामिका - मौसियाँ
- सरिता शर्मा - बेटी
- अरुण कमल - मुक्ति
- ज्ञानेन्द्रपति - प्यासा कुआँ
- गगन गिल - इस तरह

Module –III

- पत्र लेखन (Letter Writing)
- व्यक्तिगत पत्र (Personal Letter)
- आवेदन पत्र (Application Letter)
- क्रयादेश के पत्र (Order Letter)
- शिकायती पत्र (Complaint Letter)
- व्यावसायिक पत्र (Business Letter- Bank And Bima)
- पारिभाषिक शब्दावली (Technical terminology 1-50)

Module IV

- अनुवाद (Translation)

MODULE I

साहित्य मानव जीवन के सौंदर्य की भावात्मक अभिव्यक्ति है। साहित्य में समाज प्रतिबिंबित है। समाज को समझने केलिए, आसपास को पहचानने के लिए सोचने के लिए और समसामयिक समस्याओं को समझने केलिए साहित्य हमें रास्ता प्रशस्त करता है। साहित्य के विभिन्न रूपों में कविता एक ऐसा रूप है, जिसमें जीवन की परिभाषा होती है। हिन्दी साहित्य के इतिहासकारों ने काल व प्रवृत्तियों के आधार पर विभिन्न शीर्षकों में हिन्दी काव्य को बाँट दिया है। हिन्दी के आदिकाल से लेकर समकालीन युग तक के कवि सिर्फ कवि नहीं रहे थे। कबीर समाज-सुधारक थे और उन्होंने समाज में मौजूद विडम्बनाओं के खिलाफ आवाज़ उठाई थी। तुलसी ने आदर्श समाज की संकल्पना की थी। रहीम जैसे कवि ने नीतिपरक मुक्तकों से समाज में सुधार लाने की कोशिश की।

आधुनिक युग के प्रवर्तक भारतेन्दु ने सती-प्रथा, बाल-विवाह जैसी कुरीतियों के खिलाफ कलम चलाई थी। छायावादी कविता भाव एवं शिल्प सौन्दर्य की दृष्टि से अपनी अलग पहचान रखती है। इसी काल में निराला जैसे कवियों ने अपनी कविताओं में सामाजिक यथार्थ का चित्रण भी किया। प्रगतिवादी युग में कविता आम आदमी के निकट आई और शोषक शक्तियों का उन्मूल नाश करके शोषण रहित समाज की स्थापना केलिए कटिबद्ध हो गई। प्रयोगवादी नयी कविता में व्यक्ति और समाज का समन्वय दिखायी पड़ता है।

सन् सत्तर के बाद हिन्दी में विकसित समकालीन कविता में जीवन व जगत की सच्चाइयों का अनुपम चित्रण मिलता है। जिसका आधार यथार्थ है। इसमें व्यवस्था के विरुद्ध आक्रोश करने की शक्ति है साथ ही आम आदमी के प्रति गहरी संवेदना भी है। इसका प्रमुख स्वर प्रतिवाद है। इसमें स्त्री, दलित, पारिस्थितिकी, आदिवासी, मीडिया आदि मुख्यतः विमर्श के रूप में प्रस्तुत हुए हैं। संक्षेप में हिन्दी काव्य ने शुरुआत से अब तक बेहतर की तलाश में समकालीनता को लांघकरआगे बढ़ने की कोशिश की है।

कबीरदास

कवि परिचय

कबीर भक्तिकाल की निर्गुण धारा के संत कवि हैं। कबीर प्रगतिशील चेतना से युक्त एक विद्रोही कवि भी है। इनकी जन्म-तिथि तथा मृत्यु के संबंध में विद्वानों में अनेक मत हैं। उनका जीवन काल सन् 1398-1518 के दौरान माना जाता है। उनका जन्म काशी में हुआ। बताया जाता है कि किसी विधवा ब्राह्मणी की कोख से इनका जन्म हुआ। जिसने लोकलाज के भय से नवजात शिशु को लहरतारा तालाब के किनारे छोड़ दिया। जिसका पालन -पोषण निःसंतान जुलाहा दंपति नीमा और नीरू ने किया।

कबीर गृहस्थ थे। इनकी पत्नी का नाम लोई था। कमाल और कमाली इनके पुत्र-पुत्री थे, किन्तु इनका मन गृहस्थ जीवन में नहीं लगा। वे आजीवन एक फक्कड़ के रूप में जनसाधारण को भक्ति और ज्ञान का अमृत वितरण करते रहे। इनकी मृत्यु संवत् 1575 विक्रमी में मगहर में हुई।

कबीर का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे एकसाथ दार्शनिक भक्त, समाज-सुधारक, मानवतावादी, विद्वान एवं ज्ञानी थे। सतगुरु रामानन्द की कृपा से उन्हें आत्मज्ञान और प्रभु-भक्ति का भाव प्राप्त हुआ। वे कविता गाते थे। किसी कविता को अक्षरबध्द नहीं किया है। लेकिन वे प्रतिभाशाली रहे और जनता की ज़िन्दगी से ताल्लुक रखने के कारण अनुभव संपन्न भी थे। उनके काव्य की बुनियाद यही अनुभव है। उन्होंने अपनी आँखों से देखा, जो अनुभूति हासिल की उसी को आम जनता की भाषा में अभिव्यक्ति भी दी।

कबीर ने जिस लोक अर्जित सत्य को समय-समय पर वाणी दी उसे उनकी मृत्यु पश्चात् उनके शिष्यों ने ग्रंथ के रूप में संकलित किया है जो 'बीजक' के नाम में जाना जाता है। बीजक के तीन भाग हैं - साखी, सबद, रमैनी। ये तीनों ही काव्य की अलग-अलग शैलियाँ हैं। साखी का अर्थ साक्षी अथवा गुरु के उपदेशों का प्रत्यक्ष रूप है। यह दोहा शैली की रचना है। कबीर के पद 'सबद' कहे गए हैं। वस्तुतः सबद का अर्थ ज्ञान-सिद्ध पुरुष के वे असाधारण वचन हैं जिन्हें आप्त वाक्य की तरह विश्वास योग्य समझा जाता है। रमैनी सात-सात चौपाइयों के बाद एक-एक दोहे में रचित है। मनुष्य माया के रूप से मोहित होकर उसमें लीन हो जाता है, यानि कि उसमें रमण करने लगता है। इस माया का तिरस्कार कर ईश्वर की पहचान करने वाले को कबीर ने रमैनी कहा है।

कबीर निराकारवादी है। उनका ईश्वर निराकार, निर्गुण है। उन्होंने बार-बार 'राम' शब्द का प्रयोग किया है। जो सगुण ब्रह्म का प्रतीक न होकर परम ब्रह्म का प्रतीक है। उनके अनुसार ईश्वर की प्राप्ति प्रेमपूर्ण व्यवहार से ही प्राप्य है। उनका कहना है-

''जाति-पाँति पूछै नहि कोई, हरि को भजै सो हरि का होई।''

वे मानते हैं कि माया रूपी अन्धकार को दूर करने के लिए ज्ञान की ज्योति की आवश्यकता है और वह ज्योति किसी सच्चे गुरु से ही प्राप्त हो सकती है, कबीर गुरु को ईश्वर से भी बड़ा मानते हुए कहते हैं-

''हरि रूठे गुरु ठौर है, गुरु रूठे हरि नाहि।'' कबीर चाहते थे कि हिन्दु-मुसलमानों में भाई-चारे की भावना उत्पन्न हो। वे ढोंग तथा अंधविश्वास समाप्त करना चाहते थे। उन्होंने हिन्दु मुस्लिम दोनों के धार्मिक और बाह्याडम्बरों पर ज़ोर प्रहार किया-

''अरे इन दोऊन राह न पाई,

मुसलमान के पीर औलिया मुरगी मुरगा खाई।

हिन्दु अपनी करै बड़ाई गगर छुअन न देहीं।

वेश्या के पायन तर सोवैं यह देखो हिंदु आई।।''

अज्ञात सत्ता को कबीर ने पति परमेश्वर के रूप में तथा जीवात्मा को प्रेयसी के रूप में मानकर जो संबंध निरूपित किया उससे भी उनके काव्य में रहस्यवाद का संचार हुआ। कबीर ने उस निर्गुण निराकार परमात्मा को संपूर्ण संसार में व्याप्त पाया है, वे उसे जानना चाहते हैं, उसकी सत्ता की अनुभूति उन्हें समग्र जग में होती है। वे कहते हैं-

लाली मेरे लाल की जित देखूं तित ताल।

लाली देखन मैं गई मैं भी हो गई लाल।।

कबीर की भाषा 'पंचमेल खिचड़ी' या 'सधुक्कड़ी' भाषा कही जाती है। कहीं -कहीं उलटबांसी और प्रतीकों का प्रयोग साधारण भाषा को कलात्मक मोड़ भी दे देता है। इस संबंध में हज़ारीप्रसाद द्विवेदी के विचार द्रष्टव्य हैं- ''भाषा पर कबीर का ज़बरदस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थे। भाषा कुछ लाचार सी कबीर के सामने नज़र आती है''। कबीर अपनी शैली के स्वयं निर्माता है। उनका समस्त काव्य मुक्तक शैली में है।

कबीर सिर्फ कवि नहीं थे। वे समाज को बदलना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने कविता को एक हथियार के रूप में इस्तेमाल किया था। कबीर ने अपनी कविता के माध्यम से समाज में प्रचलित अंधविश्वासों और अत्याचारों के खिलाफ संघर्ष किया था। धार्मिक कट्टरता और वर्ग वैषम्य से परे मानव को समान मानने की उदात्त संकल्पना से प्रेरित होने की वजह कबीर का स्थान सर्वकालीन है।

दोहे

1. सतगुरु की महिमा अनन्त, अनन्त किया उपगार।

   लोचन अनन्त उघारिया, अनन्त दिखावनहार।।

शब्दार्थ :- सतगुरु -गुरु; अनंत- असीमित; उपगार -उपकार; लोचन- दृष्टि, आँख; उघारिया- खोलकर; दिखावनहार- दिखलानेवाला।

व्याख्या :- ज्ञान के आलोक से संपन्न सद्गुरु की महिमा असीमित है। उन्होंने शिष्यों को जो उपकार किया है वह भी असीम है। सद्गुरु ही अपने भक्त या शिष्य की अज्ञता को दूर करनेवाला है। अपने शिष्य की अपार शक्ति संपन्न ज्ञान को

उद्घाटित करके परम तत्व का साक्षात्कार कराने की रास्ता दिखाते है। सद्गुरु के अलावा परम ज्ञान प्राप्त न कर पाएगा।

कबीर ने तत्सम और तद्भव शब्दों के उचित विन्यास से सद्गुरु की महिमा, उपकारी वृत्ति और आध्यात्मिक कर्म को व्यंजित किया है।

2. चौसठि दीवा जोई करि, चौदह चन्दा मांहि।

तिहि घर किसको चांदना, जिहि घर गोविन्द नांहि।।

शब्दार्थ : चौसठि -चौसठ; दीवा-दीपक, दिया; चंदा- चंन्द्रमा; चांदना- प्रकाश।

व्याख्या : किसी घर में चौंसठ दीपकों को एक साथ प्रज्वलित किया जाय और उसमें चौदह चन्द्रमा (चन्द्रमा की चौदहों कलाओं) की चाँदनी समाहित हो जाय तो भी यदि वहाँ गोविन्द का प्रकाश नहीं है तो अंधेरा ही रहता है। आलोकित होना है तो वहाँ गोविंद अनिवार्य है। गोंविद के बिना किसी की चाँदनी वहाँ हो ही नहीं सकती।

इस साखी में घर शरीर का प्रतीक है। चौंसठ दीपक यानि चौंसठ कलाएँ और चौदह चंदा का मतलब है चौदह विधाएँ। यदि किसी व्यक्ति जितना भी क्षमतावान क्यों न हो यानि उसमें चौंसठ कलाओं और चौदह विधाओं का ज्ञान है किंतु उसमें ईश्वरीय आलोक का अभाव है तो उसका ज्ञान प्रकाशित नहीं हो सकता। प्रस्तुत दोहे में कबीर ने भक्ति और ज्ञान के संबंध को प्रदर्शित किया है। इसमें विशेषोक्ति अलंकार का विधान है।

3. पासा पकड़ा प्रेम का, सारी किया शरीर।

सतगुरु दांव बनाइया, खेलें दास कबीर।।

शब्दार्थ :- सारी- गोट।

व्याख्या : - चौपड़ के खेल में पासा और गोटी का प्रयोग होता है। ईश्वर भक्ति के लिए कबीर ने शरीर को गोटी और प्रेम को पासा बताया है। सद्‌गुरु ने दाँव बता दिया। अब प्रेम और भक्ति का खेल चल रहा है। व्यक्तियों की मानसिक वृत्तियाँ और व्यवहार भिन्न-भिन्न होते हैं। संसार में आकर्षण के भी अनेक रूप हैं। मध्यकाल में चौपड़ का खेल एक लोकप्रिय खेल था। यहाँ कबीर ऐसे खेल प्रेमियों को भक्ति के चौपड़ में खेलने केलिए आमंत्रित करते हैं। क्योंकि इसका फल उत्कृष्ट है।

इसमें रूपक अलंकार है। रूपक के आवरण में प्रेम और भक्ति का रोचक चित्रण है। प्रभु-प्रेम पर पासे का आरोप किया गया है।

4. चकई बिछुरो रेनि को, आयी मिली परभाति।

जे जन बिछुटे राम सों, ते दिन मिले न राति।।

शब्दार्थ :- चकई -एक प्रकार के पंछी जो रात को बिछुड़ने पर ही दिन में मिलते हैं ; बिछुरो- बिछुड़ना; रेनि-रात्रि; परभाति- प्रभात, सवेरा, सुबह; जे-जो; सों- से, ते- उसे, उन्हें।

व्याख्या :- कबीर कहते है कि यद्यपि चकई पंछी रात को बिछुड़ जाते हैं पर दिन होते ही उनका मिलन होता है। वे सिर्फ रात को अलग रहने के लिए अभिशप्त हैं। लेकिन जो व्यक्ति राम से अलग होता है, फिर रात हो या दिन किसी भी

वक्त मिलन असंभव है। इसलिए कबीर की सलाह है कि हमेशा राम के प्रेम या भक्ति में तल्लीन रहना ही बेहतर है। राम यानि ईश्वर से बिछुट या अलग होने वाला जीव (आत्मा) कभी भी परमात्मा से मिल न पाएगा।

5. बिरहिनि ऊभी पंथ सिरि, पंथी बूझे धाई।

एक सबद कहि पीव का, कबइ मिलेंगे आइ।।

शब्दार्थ :- बिरहिनी- वियोग में जीने वाली; ऊभी-खड़ी; पंथ सिरि- रास्ते पर; पंथी- पथिक; बूझै- पूछती है; धाइ- दौड़ कर; सबद-शब्द; कहि- कहना; पीव प्रियतम; कबई- कब; आइ-आना।

व्याख्या :- आत्मा रूपी विरहिणी रास्ते में खड़ी है। वह हर गुज़रने वाले पथिक से प्रियतम का हाल पूछती है। परमात्मा के मिलन से आकुल आत्मा का चित्रण इसमें होता है। आत्मा विरहिणी है। वह कहती है कि हे पथिक एक शब्द तो बताओ कि प्रियतम कब आकर मुझसे मिलेंगे।

इस सखी में 'पंथ' जीवन पथ का सूचक है। उसमें गुज़रने वाले पथिक साधु महात्मा हैं। जिन्हें परमात्मा के विषय में पूर्ण ज्ञान है वे ही विरहिणी की दशा देखकर बता सकते हैं कि क्या उसकी साधना की चरम सीमा आ गयी है?

इसमें भावात्मक रहस्यवाद की अभिव्यंजना की गयी है। आध्यात्मिक श्रृंगार की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति इसमें झलकती है।

सूरदास

कवि परिचय

हिन्दी साहित्य में कृष्ण भक्ति धारा को प्रवाहित करने वाले भक्त कवियों में सूरदास का शीर्षस्थ स्थान है। उनका जन्म दिल्ली के निकट ब्रज की ओर स्थित 'सीही' नामक गाँव में हुआ था। उनका जन्म वर्ष सन् 1478 और मृत्यु सन् 1589 में हुआ था। इनके माता-पिता के संबंध में प्रामाणिक रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। इनकी जाति पर भी मत भेद है। सूर नेत्रविहीन थे यह तो निर्विवाद है। जन्मांध थे या बाद में हुए यह भी विवादास्पद है।

इनके आरंभिक जीवन के विषय में केवल इतना ही ज्ञात है कि वल्लभाचार्य से दीक्षित होने से पूर्व संन्यासियों के साथ गऊ घाट पर रहते थे साथ ही कृष्णभक्ति में विनय के पद गाते थे। वल्लभाचार्य ने इन्हें अपने संप्रदाय में दीक्षित कर लिया। सूरदास आचार्य जी की आज्ञा से श्रीनाथ जी के मन्दिर में भजन-कीर्तन करने लगे। यहाँ की गायक मंडली में आठ भक्त गायक थे, जो 'अष्टछाप' के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनमें सूर का स्थान सर्वोपरि है। पुष्टिमार्ग की उपासना और सेवा प्रणाली का अनुसरण करते हुए सूर ने जीवन पर्यन्त पद रचना की।

सूर काव्य का मुख्य विषय कृष्ण भक्ति है। भागवत के आधार पर उन्होंने राधा-कृष्ण की अनेक लीलाओं का आकर्षक वर्णन किया है। फिर भी उनके भाव चित्रण में वात्सल्य भाव को श्रेष्ठतम माना जाता है। वात्सल्य का कोना-कोना झाँक आए हैं-

''मैया ! मैं नहिं माखन खायौ।''

सूर की श्रृंगार-व्यंजना भी अद्वितीय है। सूर का संयोग चित्रण जितना सुखद और उल्लासमय है, वियोग चित्रण उतना ही करुण, मर्मस्पर्शी और हृदयग्राही है। कृष्ण-राधा और गोपियों की रासलीला के प्रसंग संयोग श्रृंगार के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। विरह-वर्णन की दृष्टि से 'भ्रमरगीत प्रसंग' महत्वपूर्म है। सूरसागर, साहित्य लहरी एवं सूरसारावली इनकी काव्य रचनाएँ हैं।

'सूरसागर' सूरदास की लोकप्रियता का आधार-स्तम्भ है। इसकी रचना भागवत की पद्धति पर द्वादश स्कन्धों में हुई है। जिसमें भगवान कृष्ण की लीलाओं का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। बच्चों के प्रति बड़ों के और बच्चों के प्रति बच्चों के सहज मानवीय प्रेम की यथार्थ और हृदयस्पर्शी अनुभूति सूर के काव्य में मिलती हैं। बच्चा कैसे बढ़ता-पलता है, कैसे रुठता-मचलता है, कैसे झूठ बोलता है, कैसे बहाने बनाता है आदि बाल-लीला संबंधी हज़ारों चित्र सूरदास के पदों में भरे पड़े हैं। 'सूरसागर' निश्चय ही बाल चेष्टाओं का विश्वकोश है।

'साहित्य लहरी' में नायक-नायिका भेद, अलंकार एवं रस-निरूपण संबंधी पद है। इसमें राधा-कृष्ण की लीला का वर्णन है। इसमें अनेक दृष्टकूट पद हैं। सूरसारावली में 1103 पद हैं। इसमें कृष्ण चरित के विविध पक्षों को उद्घाटित किया गया है।

सूरदास की शक्ति का आधार उनकी भाषा है। उनकी भाषा ब्रज है। सूर के कारण ही ब्रज भाषा को भक्ति युग की काव्य भाषा का गौरव स्थान मिला था। भाषा को प्रवाहमयी बनाने के लिए उन्होंने संगीत और लय का भी इस्तेमाल किया था। अलंकरण की दृष्टि से वे रूपक, उपमा और उत्प्रेक्षा के प्रयोग में सिद्धहस्त थे। चित्रात्मकता, बिंबात्मकता और सहजता सूर की काव्य भाषा के अंगभूत तत्व हैं। भाषा की सजीवता के लिए मुहावरों और लोकोक्तियों का पुट सूर की भाषा का सौन्दर्य है।

पद

1. मेरो मन अनत कहाँ सुख पावे।

जैसे उड़ि जहाज को पंछी, फिरि जहाज पर आवे।

कमल नयन को छांड़ि महातम, और देव कों ध्यावे।

परम गंग को छांड़ि पियासो, दुरमति कूप खनावे।

जिहिं मधुकर अंबुज रस चाख्यो, क्यों करील फल भावे।।

शब्दार्थ : - मेरो - मेरा; अनत- अन्यत्र; पै - पर; दुश्मति - दुर्बुद्धि; खनावै - खोदना

व्याख्या :-इस पद में सूरदास बताते हैं कि उनका मन पूर्णतः कृष्ण में तल्लीन हो गया है। अन्यत्र कहीं भी उन्हें सुख-चैन उपलब्ध नहीं है। उनका आसरा और आधार और कोई नहीं

है। वे श्रीकृष्ण के बिना और किसी की कामना भी नहीं करते है। सूरदास की अनन्य कृष्ण भक्ति ही इस पद में गूँजती है।

सूर का कहना है, हे कृष्ण मेरे मन को तुम्हारे सिवा अन्यत्र कहाँ से सुख मिलेगा? जहाज से उड़ी चिड़िया को आखिर जहाज पर ही आना पड़ेगा। उसे कोई आसरा, आलम्बन नहीं है। प्यासा आदमी पवित्र गंगा को त्यागकर कूप खोदने की कोशिश करेगा तो उसकी दुर्गति ही कही जाएगी। जिस भौंरे ने एक बार कमल-रस पिया है वह फिर किस लालच में करील फल चखने जाएगा? कमलनयन कृष्ण ही सबकुछ एवं सर्वोत्तम है।

2. जा दिन मन पंछी उड़ि जैहें।

ता पिन तेरे तन-तरुवर के, सबै पात झरि जैहैं।
या देही गरब न करिये, स्यार-कागगिध खैहैं।
तीननि मैं तन कृमि, कै बिष्टा के ह्वै खाक उड़ैहैं।
कहं वह नीर, कहाँ वह सोभा, कहं रंग-रूप दिखैहैं।
जिन लोगनि सों नेह करति है, तेई देखि घिनैहैं।
घर के कहत सबारे काढ़ो, भूत होह धर खैहैं।
जिन पुत्रनिहिं बहुत प्रतिपाल्यो, देवी-देव मनेहैं।
तेई ले खोपरी बांस दे, सीस फोरि बिखरे हैं।
अजहूँ मूढ़ करो सतसंगति, सन्तनि में कछु पैहैं।
नर बपु धारि नाहिं जन हरि को, जम की मार सो खैहों।
सूरदास भगवंतु भजन बिनु बृथा सु जनम गवैहैं।।

शब्दार्थ : - सबै - सारा; पात- पत्ता; नीर- पानी; सोभा- शोभा; नेह- स्नेह; भगवंतु- भगवान।

व्याख्या :-इस पद में सूरदास जी ने मानव जीवन की सच्चाई की बयान की है। सूरदास कहते हैं कि हे मन! शरीर से जिस दिन जीवात्मा रूपी पंछी बाहर निकल जायेगा, उस दिन शरीर रूपी वृक्ष के सभी पत्ते झड़ जायेंगे। शरीर पर गर्व न करो। क्योंकि मर जाने के बाद यही शरीर सियार, काग और गिध खाएँगे। शरीर की तीन गति (आत्मा- परमात्मा-जीव) में शरीर गाड़ जाने से कीडा बनेगा। जला दिया जाएगा तो राख हो जाएगा। सौन्दर्य, रंग, रूप कहीं भी दिखेगा नहीं। जीवन भर अपने परिवार के लिए खटता रहा उसके शरीर छोड़ने के बाद उसके वही परिवार वाले कहते हैं कि इसके मृत शरीर को जितनी जल्दी हो घर के बाहर निकालो, कहीं ऐसा न हो इसकी आत्मा यहीं भूत बनकर रह जाये और घर के लोगों को खाना शुरु कर दे। जिन औलादों को दीर्घायुष्मान बनाए गए थे वे ही बाँस लेकर प्रहार कर खोपडी फोट देंगे। सूरदास का कहना है कि सत्संग से ही परलोक का सहारा प्राप्त है । मात्र शरीर धारण करने से भगवान का भक्त नहीं होता। मनुष्य का श्रेष्ठ जन्म भगवत् भजन के बिना व्यर्थ हो जाएगा।

3. मैया, कबहिं बढ़ेगी चोटी?

किती बार मोहिं दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी।

तू जो कहति बल की बेनी ज्यों है है लांबी-मोटी।

काढत-गुहत न्हवावत जैहै नागिनि सी भुई लोटी।

काचौ दूध पियावति पचि-पचि, देति न माखन-रोटी।

सूरदस चिरजीवी दौउ भैया, हरि-हलधर की जोटी।।

शब्दार्थ : - मैया - माँ; कबहिं-कब; मेंहि - मुझे; अजहूँ- आज भी, बल-बलराम; जोटी- जोड़ी।

व्याख्या :-इस पद में सूरदास कृष्ण की बाललीला का वर्णन करते हैं। भगवान कृष्ण कहते हैं - मैया ! मेरी चोटी कब बढ़ेगी? कितनी बार मुझे दूध पीते-पीते हो गई पर मेरी यह चोटी आज भी छोटी की छोटी बनी हुई है। यह तो अब भी छोटी ही है। तू जो यह कहती है कि दाऊ भैया की चोटी के समान यह भी लम्बी और मोटी हो जाएगी। संभवतः इसीलिए तू मुझे नित्य नहलाकर बालों को कंघी से संवारती है, चोटी गूँथती है, जिससे चोटी बढ़कर नागिन जैसी लंबी हो जाए। कच्चा दूध भी इसीलिए पिलाती है। तू मुझे माखन व रोटी भी नहीं देती। इतना कहकर कृष्ण रूठ जाते हैं। सूरदास जी कहते हैं कि बलराम -श्रीकृष्ण की जोड़ी अनुपम है, ये दोनों भाई चिरजीवी हों । हरि हलधर की ये जोड़ी सदा बनी रहे।

सुमित्रानन्दन पंत -नौका विहार

कविपरिचय :

सुमित्रानंदन पंत छायावादी युग के प्रतिष्ठित कवि हैं। पंत जी का जन्म उत्तर प्रदेश के पर्वतीय अंचल में स्थित अल्मोड़ा के पास कौसानी नामक ग्राम में हुआ था। आप के पिता का नाम पं.गंगादत्त था। माता सरस्वती देवी का देहावसान पंत जी के जन्म के कुछ ही घण्डे बाद हो गया। इनका बचपन का नाम गोसाईदत्त था। अलमोड़ा के प्राकृतिक सौन्दर्य ने उन्हें बचपन से ही आकृष्ट किया था। उनके काव्य-व्यक्तित्व के रूपायन में प्रकृति ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई

थी। प्रकृति संबंधी उनकी महत्वपूर्ण कविताएँ हैं- परिवर्तन, एक तारा और नौका विहार।

वे सुकुमार कवि थे। इनकी कविताओं में अधिकांश छायावादी प्रवृत्तियाँ देखी जा सकती हैं। वे छायावादी कवियों के चार स्तंभों में एक है। स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह इनकी कविताओं में पाया जाता है। पंत की प्रारंभिक काल की रचनायें भावुकता और कल्पनाशीलता से युक्त हैं। यानि पहले वे छायावादी थे, फिर प्रगतिवादी बने और बाद में आध्यात्मवादी रहे। पंत जी को 1968 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

पंत जी का रचना संसार काफी विस्तृत है। कविता के अतिरिक्त उन्होंने काव्य-रूपक, जीवन चरित्र, उपन्यास, कहानियाँ तथा कला समीक्षा के क्षेत्र में भी रचनायें कीं। उनके प्रारंभिक काव्य ग्रंथ हैं- ग्रंथि, वीणा, पल्लव और गुंजन। छायावादोत्तर प्रगतिवादी चेतना से युक्त उनके काव्य संग्रह हैं - युगान्त, युगवाणी और ग्राम्या। स्वर्ण किरण, स्वर्णधूलि आदि काव्य संग्रह अरविंद दर्शन से प्रभावित हैं। उनके महाकाव्य 'लोकायतन' में भी अरविन्द दर्शन की अभिव्यक्ति हुई है। पंत मुख्यतः कोमल भावनाओं के कवि रहे हैं। उन्होंने प्रकृति को सजीव, सुकुमार एंव नारी रूप में प्रस्तुत करते हुए अपनी कोमल कल्पना के सहारे उसके सभी रूपों की मधुर झांकियाँ प्रस्तुत की हैं।

पंत जी का कलापक्ष भी अत्यन्त पुष्ट एवं सबल है। कोमलकांत पदावली, चित्रात्मक भाषा, नवीन अलंकारों का प्रयोग एवं गेयात्मक शैली आदि के कारण उनके शिल्पपक्ष अत्यंत समृद्ध हैं। एक ही रचना में कई छन्दों का प्रयोग करने में पंत सिद्धहस्त हैं। छन्दयोजना और भावों के सामंजस्य के

कारण उनकी कविताओं में चित्रमयता, ध्वन्यात्मकता एवं सांकेतिकता सर्वत्र बनी हुई है। उन्होंने खड़ीबोली में पर्याप्त कोमलता एवं मधुरता लाकर छायावादी काव्य को समृद्ध किया है। पंत ने अपने काव्य में शब्दालंकारों और अर्थालंकारों का प्रयोग समान रूप से किया है। अर्थालंकारों में उन्हें उपमा और रूपक विशेष प्रिय है। इसके अतिरिक्त उन्होंने उल्लेख, स्मरण, दृष्टांत आदि अलंकारों का प्रयोग भी प्रचुरता से किया है।

सारांश

रूप चित्रण की दृष्टि से यह छायावादी काल की श्रेष्ठ कविता मानी जाती है। इसका रचना काल सन् 1932 है। ऐसा कहा जाता है कि यह कविता तब लिखी गई जब पंत जी कालाकाँकर के राजमहल में अतिथि बन कर रहे थे। गंगा के किनारे स्थित राजभवन में वे रुके थे और वहाँ रहते हुये नाव पर गंगा में सैर करने जाया करते थे। गंगा एवं उसके आसपास के अनेक अनुपम एवं हृदय ग्राही बिम्बों ने इस कविता को अद्‌भुत काव्य-सौन्दर्य प्रदान किया है। इसमें चाँदनी रात में गंगा में नौका विहार के अनेक मनोरम दृश्य अंकित किये गये हैं। इस कविता का प्रारम्भिक भाग प्रकृति चित्रण का श्रेष्ठ उदाहरण है किंतु अंतिम भाग में कविता दर्शन प्रधान हो जाती है।

प्रकृति के शांत, नीरव ज्योत्सनामयी रात्रि में गंगा में नौका विहार करने वाले कवि की कोमल कल्पनाओं का चित्र इसमें पाया जाता है। चाँदनी रात में गंगा नदी कवि को श्वेत शैया पर लेटी हुई श्रान्त क्लान्त सुन्दरी के समान लगती है। चारों ओर उज्वल चाँदनी फैली हुई है। गंगाजल में पड़ने वाला चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब देखकर ऐसा लगता है जैसे

तपस्विनी बाला गंगा अपने चन्द्रमुख को हथेली में रखकर लेटी हुई है। गंगा जल की लहरियाँ उस सुन्दरी युवती के छाती पर बिखरी केशराशी के समान प्रतीत है। तारों भरे नीलाकाश की चंचल छाया ऐसी प्रतीत होती है कि गंगा का सितारों जड़ा नीला आंचल उसके गोरे अंगों का स्पर्श पाकर सिहर उठता है। चाँदनी में प्रकाशित लहरें उस सुन्दरी युवती की साड़ी की सिकुडन में वर्तुल एवं मृदुल रूप में प्रतीत हैं।

ऐसे वातावरण में कवि एक छोटी सी नाव लेकर गंगा विहार करने चल देता है। किनारे रेत पर पड़ी चाँदनी ऐसी चमक रही थी मानो सीप के भीतर मोती अपनी आभा बिखेर रही हो।

नाव की पालें चढ़ा दी गयी और लंगर उठा लिया गया। अब नाव अपने पाल रूपी सफेद पंख को खोल कर हँसिनी की भाँति गंगा की धारा पर विचरण कर रही थी। यहाँ कवि कालाकांकर राजभवन के ऐश्वर्य -वैभव की ओर भी संकेत किया है। जल में ताराओं का समूह प्रतिबिंबित हो रहा था। देखकर ऐसा लगता था कि तारे आँखे फाड़कर जल के निचले भाग में कुछ खोज रहे हैं। दशमी की चन्द्रकला लहरों में झलक उठती थी मानो कोई मुग्धा नायिका अपने घूँघट का पट उठाकर झाँक रही हो।

अब नौका नदी के बीच धारा में आ जाती है। नदी का किनारा दृष्टि से ओझल हो गया है। दूर दोनों किनारों पर स्थित वृक्षों की पंक्तियाँ टेढ़ी भू-रेखा (भौहों सी) दिखाई दे रही थी। और आकाश विशाल नीले नेत्र सा लग रहा था। धारा के बीच एक छोटा सा द्वीप है। उसे देखकर कवि को ऐसा लगता है कि कोई शिशु अपनी मां के वक्षपर सो रहा हो -

''माँ के उर पर शिशु-सा, सामीप सोया धारा में एक द्वीप,

ऊर्मिल प्रवाह को कर प्रतीप;

वह कौन विहग ? क्या विकल कोक, उड़ता, हरने का निज विरह-शोक?

छाया की कोकी को विलोक?''

कुछ दूर उड़ने वाली पक्षी को कवि विरहातुर चक्रवाक मानता है। शायद उसने अपनी ही छाया को चकवी समझकर उससे मिलने केलिए उड़ जाता है।

अब नौका धारा के विपरीत चलने लगी है। जल में डाँडों के चलने से फेन युक्त जल की बूँदें चारों ओर बिखरी पड़ती है मानो वे अपने दोनों हाथों से मोती के हार बिखेर रही हो। चाँदनी लहरों में पड़कर रेंगते साँप के बराबर लग रहा है। अब नदी उथली हो गयी है। नौका तट के समीप पहुँच जाती है और कवि मानव के अस्तित्व के बारे में सोचने लगते है। संसार का जीवन नौका के समान सदा गतिमान है। नदी का उद्‌गम होता है, प्रवहित होकर अंत में सागर में पहुँचकर इसका शाश्वत मिलन होता है। इसी प्रकार जीवन का उद्‌गम स्थल वहीं ब्रह्म है और अंत में उसी में विलीन होता है। उद्‌गम हमारा जन्म, गति-जीवन एवं मृत्यु-संगम है। नौका विहार ने जीवन की निरंतरता का बोध जगाया है। इस धारा के समान ही यह जीवन सतत गतिशील और अमर है।

कला और भाव दोनों दृष्टियों से यह कविता श्रेष्ठ मानी जा सकती है। कवि की संवेदनशीलता, रूपचित्रण क्षमता आदि का पूर्ण विकास यहाँ हुआ है।

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' - जुही की कली

कवि परिचय

सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला (1898-1962) हिन्दी के छायावादी कवियों में प्रमुख है। उनका जन्म बंगाल के मेदिनापुर जिले में हुआ था। इनके पिता पं. रामसहाय त्रिपाठी थे। निराला जी ने स्वाध्याय द्वारा अंग्रेज़ी, संस्कृत, बंगला और हिन्दी का पर्याप्त ज्ञान अर्जित किया। निराला की काव्य-यात्रा एक पूरे युग की काव्य-यात्रा है। छायावादी कवि होते हुए भी, छायावादी काव्य की विशिष्टताओं का निराला ने अतिक्रमण किया था। हिन्दी साहित्य को नयी दिशा देने वाले कवियों में उनका नाम सर्वोपरि है। वे निराली प्रतिभा के धनी थे। अपने वैयक्तिक और साहित्यिक जीवन में निराला को अनेक मुसीबतों को झेलना पड़ा था। कविता और जीवन में वे सचमुच क्रांतिकारी रहे थे। उनकी मुक्त छन्द में लिखी गई 'जुही की कली' तत्कालीन मान्यताओं से मेल नहीं खाती थी।

मौलिक उद्‌भावना, ओजस्विता और प्राणवत्ता, संगीतमयता, अनुभूति कल्पना, तीखा व्यंग्य, चित्रव्यंजना आदि निराला के काव्य की मूलभूत विशेषतायें हैं। उनकी प्रारंभिक कविताओं में जहाँ प्रेम और सौन्दर्य का चित्रण है, वही बाद की कविताओं में गीतों की प्रधानता है। उनकी कविताओं में सौन्दर्य वर्णन स्थूल और सूक्ष्म दोनों रूपों में आया हुआ है। निराला के काव्य में मानवतावादी स्वर सर्वाधिक मुखरित हुआ है। उनकी प्रगतिवादी कविताओं में मानवीय शोषण और अत्याचार का खुला चित्रण मिलता है। निराला मानवीय स्वतंत्रता के प्रबल पक्षधर रहे है। इसी कारण उनके काव्य में राष्ट्रीय प्रेम की भावना तीव्ररूप में मुखरित हुई है। वे सामाजिक कुरीतियों अंधविश्वासों तथा पाखण्ड के कट्‌टर

विरोधी थे। 'सरोज स्मृति' कविता में उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन का वर्णन किया है। साथ ही साथ साहित्यिक रूढ़ियों को तोड़ा है।

निराला ने काव्य को नवीन भाषा, छन्द, प्रतीकों तथा उपमानों से सजाया है। छन्दों के बंधन को अस्वीकार कर उन्होंने काव्य को एक नया स्वरूप प्रदान किया। उनकी भाषा भावानुरूप होने के साथ-साथ ध्वन्यात्मकता, चित्रात्मकता, लाक्षणिकता, कोमलता और संगीतात्मकता आदि गुणों से युक्त है। उनकी भाषा में संस्कृत के तत्सम शब्द, उर्दु, बंगला और अंग्रेज़ी के शब्द आये हैं।

काव्य संकलन - परिमल, बेला, नये पत्ते, गीतिका, अनामिका, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, अणिमा, अर्चना, अपरा, गीतगुंज।

कहानी संकलन - सुकुल की बीवी, लिली, चतुरी चमार और सखी।

उपन्यास - अलका, अप्सरा, चमेली, चोटी की पकड, निरुपमा, प्रभावती, उच्छृंखल

रेखाचित्र -कुल्लीभाट, बिल्लेसुर बकरिहा।

निबन्ध -प्रबन्ध पद्य, प्रबन्ध प्रतिमा, रवीन्द्र काननकुसुम

सारांश

'जुही की कली' 1916 में लिखी निराला की प्रथम कविता है। छायावाद की सभी विशेषताएँ इस कविता में हम देख सकते हैं। इसमें मुक्त प्रेम की पूजा के साथ प्रकृति सौन्दर्य की आराधना भी है। इस कविता में प्रकृति सौन्दर्य के

साथ-साथ रागात्मक संबंध की अभिव्यक्ति भी हुई है। श्रृंगार पक्ष के अतिरिक्त इस कविता का आध्यात्मिक पक्ष भी सशक्त है। कली की सुप्ति से लेकर जागरण और मिलन की वर्णित स्थितियों में आत्मा की रहस्यानुभूति की अवस्था का संकेत है। कविता की अंतिम परिणति में आत्म -तल्लीनता का भाव है। इस दृष्टि में कली आत्मा का और पवन परमात्मा का प्रतीक है।

सौभाग्यवती कली वसंत की रात में अलसाई दशा में वन -वल्लरी पर पत्रांक में सोती है। वह प्रेम स्वप्न में डूबी हुई है। उसका अनन्प प्रियतम पवन परदेश में है। चाँदनी रात में पवन को अपनी प्रिया कली की याद आयी। वह कली से मिलने के लिए आतुर होता है। फिर क्या कहना। वह नदी, वन, उपवन, पर्वत, तालाब तथा लताकुंजों को पार करता हुआ प्रिया के पास पहुँच जाता है।

''आयी याद बिछुड़न से मिलने की वह मधुर बात,

आयी याद चाँदनी की धुली हुई आधी रात,

आयी याद कान्ता की कम्पित कमनीय गात,

फिर क्या? पवन

उपवर-सर-सरित गहन-गिरि- कानन

कुंज -लता -पुजों को पार कर

पहुँच जहाँ उसने की केलि कली -खिली -साथ!''

लेकिन इधर नायिका कली सोई पड़ी है। नायक पवन उसके गालों को चूमकर जगाने का प्रयत्न करता है। लेकिन यौवन

की मदिरा पीकर उन्मत्त पड़ी कली जाग नहीं उठती। निष्ठुर नायक दीवाना होकर लता को झकझोरता है। वह कली की पंखुड़ियों को मसल देता है। कली एकदम चौंक पड़ती है। चकित होकर चारों ओर देखने लगी। पवन को अपनी शय्या के निकट देखकर वह लज्जा से सिर नवाकर हँस पड़ती है। फिर प्रिय के प्रेमपूर्वक खेल में खिल उठती है। वह अपने प्रिय के साथ रंग-रेलियों में डूब जाती है।

इस कविता की बाहरी बनावट केवल प्रकृति चित्रण जैसा प्रतीत करता है। लेकिन इसमें जुही की कली और पवन का मानवीकरण किया गया है। नायिका की समस्त क्रियाओं का कली पर आरोप कल्पनाशील और मानवीकरण का सफल प्रयोग है। प्रणय स्मृति में कली की रति क्रीड़ा का चित्र लौकिक प्रेम में अलौकिक रति क्रीड़ा का संकेत जिसे निराला जी ने लौकिक प्रेम के सहारे संयोजित किया है। व्यावहारिक स्तर पर संगम की स्मृति में अकेले रहते वक्त सर्वाधिक पीडाजनक है। पुर्नमिलन सर्वाधिक संतोषजनक भी है। भौतिक और अध्यात्मिक का बेजोड़ तालमेल यहाँ दर्शाया जाता है।

नाच -अज्ञेय

कविपरिचय

अज्ञेय का पूरा नाम सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन अज्ञेय है। इनका जन्म सन् 1911 में कुशीनगर (देवरिया) में हुआ था। इन्होंने घर पर ही संस्कृत, फारसी और अंग्रेज़ी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। एम.ए. करते समय उनका संपर्क स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़े क्रांतिकारियों से हुआ जिससे वे स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने लगे

और कई बार जेल गये। दिनमान, प्रतीक और नया प्रतीक के संपादक के रूप में उन्होंने महत्वपूर्ण काम किया था।

अज्ञेय का पूरा जीवन साहित्य के लिए समर्पित रहा है। उन्होंने कहानी, उपन्यास, समीक्षा, निबंध, कविता, यात्रावृत्तांत सभी के द्वारा हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। तार सप्तक, दूसरा सप्तक, तीसरा सप्तक, रूपाम्बरा के संपादन करके साहित्य में नयी प्रवृत्तियों एवं काव्यधाराओं का सूत्रपात किया।

अज्ञेय ने आधुनिक हिन्दी साहित्य को नवीनतम रूप प्रदान किया है। छायावाद और प्रगतिवाद के प्रतिक्रिया स्वरूप अज्ञेय ने ही प्रयोगवाद का प्रवर्तन किया। अज्ञेय ने कथ्य और शिल्य दोनों क्षेत्रों में मौलिक उद्‌भावनाएँ की है। सचमुच मौलिकता उनके काव्य की बुनियाद है। प्रेमानुभूति उनकी कविता का एक महत्वपूर्ण आयाम है। प्रकृति चित्रण में भी वे माहिर है। मानव के स्वतंत्र अस्तित्व की प्रतिष्ठा और व्यक्ति स्वातंत्र्य की आकांक्षा उनकी कविता का एक महत्वपूर्ण आयाम है। उनका काव्य नये भाव-बोध का काव्य है। अज्ञेय ने अपने काव्य में अपने युग के यथार्थ को नये रूप में प्रस्तुत करने की कोशिश की है।

प्रयोगवादी कविता व्यक्ति यथार्थ के चारों ओर बुनी गई थी। अज्ञेय की प्रारंभिक कवितायें वैयक्तिकता से पूर्ण थी किन्तु बाद में उन्होंने व्यष्टि और समष्टि में समन्वय किया जो नयी कविता की प्रमुख विशेषता है। अज्ञेय का व्यक्तिवाद व्यक्ति केन्द्रित न होकर समष्टि केन्द्रित है।

अज्ञेय की भाषा नवीन अनुभूतियों, नवीन प्रतीकों, नवीन अपमानों के द्वारा सशक्त हुई हैं। कहीं उनकी भाषा पूर्ण

संस्कृतकनिष्ठ है तो कहीं विषय के अनुसार साधारण एवं सहज हो गयी है। अज्ञेय ने अपने काव्य में प्रयुक्त बिंबों को मानव के दैनिक जीवन से लिया है। उनके काव्य में प्राचीन एवं नवीन दोनों प्रकार के प्रतीक मिलते हैं। नवीन उपमानों का प्रयोग अज्ञेय की सबसे बड़ी विशेषता है। इस दृष्टि से 'कलगी बाजरे की' कविता उल्लेखनीय है। उपमा, रूपक, अतिशयोक्ति, उत्प्रेक्षा आदि के अतिरिक्त नवीन अलंकारों में मानवीकरण का प्रयोग भी हुआ है। उन्होंने अधिकांश मुक्तक छन्द में रचना की है।

मुख्य रचनाएँ

काव्य कृतियाँ :- भग्नदूत, चिन्ता, इत्यलम्, हरी घास पर क्षण भर, बावरा अहेरी, इन्द्रधनु रौदें हुये थे, आँगन के पार द्वार, कितनी नावों में कितनी बार आदि

उपन्यास :- शेखर : एक जीवनी, नदी के द्वीप, अपने अपने अजनबी।

निबंध :- आत्मनेपद, त्रिशंकु,आलवाल आदि

यात्रा वर्णन :- एक बूँद सहसा उछली,अरे यायावर रहेगा याद ?, जन जनक जानकी।

सारांश

'नाच' कविता जीवन की सच्चाई को प्रस्तुत करती है। असल में यह जन्म-मृत्यु के बीच का ही नाच है। यह एक प्रतीकात्मक कविता है। यहाँ निजी जीवनानुभव दूसरों को नाच के रूप में प्रतीत है। 'नाच' यहाँ जीने का प्रतीक है और रस्सी जीवन है। तनी हुई रस्सी पर दोनों तरफ आदमी दौड़ता

है। यह दौड़ मानव का श्रम अस्तित्व प्राप्त करने का तरीका है। जन्म से मृत्यु तक का फासला है 'खंभा'। इन दो खंभों के बीच रस्सी को बाँधा गया है। यानि जन्म से लेकर मृत्यु तक इस जीवन रूपी रस्सी पर चलना हमारी नियती है।

कवि कहते हैं कि मैं तनी हुई रस्सी पर नाचता हूँ। मेरा नाच इन दो खंभों के बीच तन कर बँधी रस्सी पर है। एक खंभे से दूसरे खंभे तक मैं नाच रहा हूँ। इस पर तीक्ष्ण रोशनी पड़ती है। उस रोशनी के सहारे लोग मेरा नाच देख रहे है। लेकिन लोग मुझे नहीं देखता, जिस रस्सी पर मैं नाचता हूँ वह भी नदीं देखता, दोनों ओर के खंभे एवं रोशनी को भी देखता नहीं है। लोग यहाँ सिर्फ मेरा नाच देखते हैं।

''न मुझे देखते हैं जो नाचता है

न रस्सी को जिस पर मैं नाचता हूँ

न खंभों को जिस पर रस्सी तनी है

न रोशनी को ही जिस में नाच दीखता है,

लोग सिर्फ नाच देखते हैं।''

तनी रस्सी पर, खंभों के बीच, उस रोशनी में दूसरे लोग को मेरा नाच ही देखते हैं, वास्तव में वह नाच नहीं है। वह मेरा जीवन सत्य है। मैं उन दो खंभों के बीच दौड़ रहा हूँ। यहाँ मेरे जीने का श्रम है।

दूसरों को मेरा यह श्रम नाच प्रतीत होते हैं। लेकिन इन दोनों खंभों के बीच का यह दौड़ असल में खंभे से तनी हुई रस्सी को खोलने या ढीला करने का मेरा श्रम है। अगर रस्सी खोल पाए तो मैं स्वस्थ हो जाऊँगा। यानि ऐसा हो जाये

तो मुझे जीवन से छुट्टी मिल जाएगी। लेकिन यह तनाव ढीलता नहीं है। रस्सी, खंभा, तीखी रोशनी, मेरा नाच कभी भी समाप्त होता नहीं है। इसलिए मुझे नाचना पड़ता है। मेरे नाच का अंत मेरे बस की बात नहीं है।

सब लोग नाच ही देखते हैं। वह रस्सी, खंभे, रोशनी, उस तनाव को कोई नहीं देखता। मेरा जीवन सत्य दूसरों के लिए नाच प्रतीत है। लेकिन मेरे लिए अपना सत्य है।

प्रश्न और उत्तर

प्रश्न : कबीर ने गुरु के बारे में क्या कहा है?

उत्तर : कबीर की दृष्टि में गुरु 'गोविन्द' से भी बढ़कर है । कबीर जिस सतगुरु की बात करते हैं वह ज्ञान का भण्डार होता है और शिष्य का सच्चा पद-प्रदर्शक। उसकी महिमा और उपकार दोनों ही अनन्त हैं। वह ज्ञान के अनन्त नेत्र खोल देता है और साधक को उस अनन्त परमात्मा के दर्शन कराते है। भक्तिमार्ग में गुरु की सहायता के बिना साधक सफलता प्राप्त नहीं कर पाता।

प्रश्न : सूर की सख्य भक्ति कैसी है?

उत्तर : भक्त प्रवर सूरदास भक्तिकाल की सगुणधारा के कृष्ण भक्त कवि है। वे वल्लभाचार्य के शिष्य थे तथा अष्टछाप के कवियों में सर्वप्रमुख थे। सूर की भक्ति पद्धति का मेरुदण्ड पुष्टिमार्ग ही है। सूरदास की भक्ति 'सख्य भाव' की है जिसमें भगवान के साथ भक्त का 'सखा भाव' रहता है। सूरदास ने सख्य भाव की भक्ति को अपनाते हुए भी कृष्ण के प्रति नन्द-यशोदा के वात्सल्य भाव की तथा राधा एवं गोपियों के दाम्पत्य एवं माधुर्य भाव की सुन्दर व्यंजना की है। गोपी लीला के अंतर्गत कृष्ण एवं गोपियों के जिस प्रेम का चित्रण सूर ने किया है उसमें

उनकी भक्ति -भावना पराकाष्ठा पर पहुँची दिखाई पड़ती है।

प्र : नौका विहार किसकी रचना है? और उसका काव्यगत सौन्दर्य?

उ : नौका विहार सुमित्रानंदन पंत जी की रचना है। रूप चित्रण की दृष्टि से यह छायावादी काल की श्रेष्ठ कविता मानी जाती है। इसका रचना काल सन् 1932 है। ऐसा कहा जाता है कि यह कविता तब लिखी गई जब पंत जी कालाकाँकर के राजमहल में अतिथि बन कर रहे थे। गंगा के किनारे स्थित राजभवन में वे रुके थे और वहाँ रहते हुये नाव पर गंगा में सैर करने जाया करते थे। गंगा एवं उसके आसपास के अनेक अनुपम एवं हृदय ग्राही बिम्बों ने इस कविता को अद्‌भुत काव्य -सौन्दर्य प्रदान किया है। इसमें चाँदनी रात में नौका विहार के अनेक मनोरम दृश्य अंकित किये गये हैं। जैसे गंगा को सुन्दरी युवति के समान, चाँदनी रात को, तारों भरे नीलाकाश, गंगा की लहरें आदि की मधुर झांकियाँ प्रस्तुत की है।

प्र : जुही की कली का काव्यगत विशेषताएँ लिखिए?

प्र : लौकिक संयोग -वियोग के आधार पर जुही की कली की व्याख्या।

प्र : 'नाच' किसकी रचना है? जीवन की व्याख्या नाच में कैसे प्रस्तुत है?

MODULE - II

मौसियाँ - अनामिका

कवि परिचय

जन्म 1 आगस्त 1961 मुज़फ्फसुर (बिहार)

समकालीन कवयित्रियों में चर्चित नाम है अनामिका। उनकी कविताओं में स्त्री की पहचान, उसकी स्वतंत्रता, मुक्ति के लिए विद्रोह करती स्त्री, अस्मिता के लिए चीखती स्त्री की भूमिका देखने को मिलती है। अनामिका की अधिकांश कविताएँ स्त्री केन्द्रित है। नारीवाद के स्वरूप अथवा समाज में स्त्री की स्थिति का चित्रण उनकी कविताओं में मौजूद है। उनका संपूर्ण साहित्य समाज और उसमें होने वाली गतिविधियों को एक स्त्री की दृष्टि से निहारता है। अनामिका की कविता प्रेम, दोस्ती, नारी की पीड़ा उसकी आकांक्षाओं और इच्छाओं को समेटती है। उसका काव्य-संग्रह 'दूब धान' के आवरण पृष्ठ पर लिखा हुआ है 'अनामिका सिर्फ कविता में ही नहीं बल्कि अपने संपूर्ण लेखन में नारी-दृष्टि की एक उदार सांस्कृतिक प्रवक्ता बनकर उभरी है। उनका स्वर नयी सहस्त्राब्दी का स्वर है।'

काव्य संग्रह :- शीतल स्पर्श एक धूप को (1975), गलत पते की चिट्ठी (1979), समय के शहर में (1990), बीजाक्षर (1993), अनुष्टुप (1998), कविता में औरत (2004), खुरदुरी हथेलियाँ (2005), दूब-धान (2007)।

उपन्यास : - दस द्वारों का पिंजरा, तिनका तिनके पास

कहानी :- प्रतिनायक

आलोचना :- स्त्रीत्व का मानचित्र, पोस्ट वॉर विमेन पोएट्स

निबन्ध :- पानी जो पत्थर पीता है, मन माँजने की ज़रूरत

सम्मान : राजभाषा पुरस्कार, भारतभूषण अग्रवाल पुरस्कार (1995), साहित्य सेतु सम्मान (2004), केदार सम्मान (2008)।

सारांश

'मौसियाँ' कविता में संबंधों का परंपरागत मूल्य एवं नव समाज का यांत्रिक जीवन के बारे में चित्रित किया गया है। मौसीपन, बुआपन, चाचीपन्थी आदि संबंधों का महत्व नव युग में कमज़ोर हो रहा है। मानवीयता घटती जाती है। यांत्रिक जीवन के पीछे हम भाग रहे हैं। इसी बीच हम मनुष्यता से दूर जा रहे है।

गर्भवती हो जाने की खबर मिलते ही, बारिश के बीच प्रकट धूप समान थोड़ी समय के लिए वे आती है। अपने हाथ से बुने स्वेटर, लड्डू और साड़ी लेकर वे आती है। झूला झुलाने के लिए, गर्भ के अंतरिम रपट सुनाने के लिए, ग्रह चक्र बताने और गर्भजन्य आलस्य को निपटाने का सलाह देने केलिए मौसियाँ आती हैं। यहाँ मानवीयता दर्शाती है। एक स्त्री गर्भवती होते जानकर मौसियाँ मानवीय स्तर पर उसके पास आकर सेवा-सलाह देती है। नए युग में ऐसी सेवा से स्त्री वंचित है। ऐसी प्रथाएँ अब नष्ट हो गयी है।

वे लोग झाड़ू लगाकर सब साफ करती है। बाल ठीक करती है। कभी डाँट कर कहती है कि -री पगली तुम किस धुन में रहती हो? अपने बालों की गाँठें भी ठीक नहीं करती । इन शरारतों से उसकी वात्सल्य ही प्रकट है।

असल में बालों के बहाने वे मौसियाँ जीवन की गाँठ ही सुलझाती है। बीच-बीच में परिहास करती है, कथा सुनाती है स्वयं हँसती और हँसाती भी है। क्योंकि मौसियाँ जानती हैं कि गर्भवती स्त्री को किस तरह की माहौल की आवश्यकता चाहिए। वे सीधे बताती है कि अचार, चटनी, मूंगबड़ियाँ कैसे तैयार करें और गर्भकाल में अनुभूत बेस्वाद के बारे में भी बताती है। भोजन शीघ्र बनाने का उपचार एवं नुस्खा भी देती हैं। इन तकलीफों पर दूसरों के ध्यान तक नहीं जाते। वही बात मौसियाँ बताती है। उनके आँखों के नीचे छाया व्याप्त होती है। महीनों गर्भ के आलस्य में बिताती है। ये मौसियाँ चालीसों आयु वाली हैं। तबतक वे अकेलापन का शिकार हुई है। वे काले-कत्थई चकत्त के बराबर है। उनके चिकित्साशास्त्र में मात्र कालीपूजा और हँसी ही है। तथा पूरे मोहल्ले की अम्मागिरी से वे जीवन गुज़र रही है।

बीसवीं सदी में अपनी निजी खेत से कोड़कर कूडागाड़ी में फेंकनेवाले चीज़ों में मौसीपन, बुआपन, चाचीपन्थी और सारी धरती की अम्मगिरी शामिल हैं। जो चीज़ें जीवन के लिए अनिवार्य हैं वही बाहर फेंक दिया जाता है।

''बीसवीं शती की कूडागाड़ी
लेती गयी खेत से कोड़कर अपने
जीवन की कुछ ज़रूरी चीज़ें
जैसे मौसीपन, बुआपन, चायीपन्थी,
अम्मागिरी मग्न सारे भुवन की।''

नये युग में मौसियों की परंपरा समाप्त प्रतीत है। मातृत्व -भातृत्व आदि संबंधों का महत्व कमज़ोर हो रहा है। संबंधों से विकसित मानविकता कम होते नज़र आता है। इस यांत्रिक जीवन में परंपरागत मूल्य, संबंधों की पवित्रता, पुरानी प्रथाएँ सब नष्ट होते जा रहे हैं। मौसियाँ काव्य में एक साधारण परंतु नवीन पारिवारिक स्त्री संबंध की मधुरता पर प्रकाश डाला गया है। पारिवारिक जीवन की तुच्छ लगने वाली बातें कितनी अहम् भूमिका रखती है, उसका सरलतापूर्ण रूप में सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है ।'मौसी' अर्थात 'माँ जैसी' का अर्थपूर्ण संबंध बड़े ही अनूठे ढंग से लिया गया है।

बेटी -सरिता शर्मा

कवि परिचय

सरिता शर्मा का जन्म 29 जुलाई को छत्तीसगढ़ में हुआ। इन्होंने हिन्दी एम.ए और पीएच.डी किया है। सरिता शर्मा जी केवल लिखती ही नहीं है बल्कि कवि सम्मेलनों में केन्द्रबिंदु बनकर वे आगे बढ़ती है। लाल किला कवि सम्मेलन में लगभग ग्यारह बार उन्होंने कविता पाठ किया है। उनकी रचना संसार की मूल चेतना में 'स्त्री' रही है। आत्मसम्मान और स्वत्व केलिए संघर्षशील स्त्री का चित्रण इनकी कविताओं में प्रचुर मात्रा में आया है। पुरुष केन्द्रित समाज की अमानवीय अवधारणों के प्रति वह हमेशा विद्रोह करती रहती है।

सरिता जी को अनेक पुरस्कार भी मिल चुके हैं। उत्तरप्रदेश सरकार द्वारा यश भारती पुरस्कार, ब्रज कोकिला

पुरस्कार, महादेवी न्यास द्वारा महादेवी वर्मा पुरस्कार, सुमन सम्मान आदि।

रचनाएँ :- पीर के सातों समुन्दर (गीत), नदी गुनगुनाती रही (गीत) हुए आकाश तुम (गीत), तेरी मीरा ज़रूर हो जाऊँ (मुक्तक), 'चाँद मुहब्बत और मैं' (गज़ल), चाँद सोता रहा (ओडियो सीड़ी) गीत बंजारन के (ओडियो सीडी)।

साराशं

जीने का अधिकार सबको है। लेकिन जन्म लेने के अधिकार से हमेशा स्त्री वंचित है। भारतीय समाज में बेटियों को सामाजिक और आर्थिक बोझ के रूप में माना जाता है। इसलिए वो समझतें है कि उन्हें जन्म से पहले ही मार देना बेहतर होगा। हमारे समाज में बहुत सारे मिथक हैं कि बेटियाँ हमेशा लेती हैं और बेटे हमेशा देते हैं। केवल एक बेटी होने की वजह से उसका समय पूरा होने के पहले ही कोख में से उस भ्रूण को खत्म करना ही कन्या भ्रूण हत्या है। 'बेटी' कविता में कवयित्री कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध आवाज़ उठाती है। पुरुषसत्ता के अमानवीय कुरीतियों का खुला चित्रण इसमें देखा जा सकता है।

माँ की कोख में पल रही उस कन्या भ्रूण को मारने के लिए माँ-बाप उतावले हो जाते हैं। तब उस माँ-बाप से कन्या-भ्रूण की याचना है कि - हे, माँ जन्म लेने की पहले ही मुझे मत मारो। हे पिता जन्म से पहले मुझे मत मारो।

कन्या भ्रूण का उम्मीद है कि प्यार-दुलार अपनी मर्जी से चाहे न दे दो। प्यार, दुलार ऐसी भावों की मुझे आशा भी नहीं, हो सके तो जन्म लेने के पहले मुझे मत मारो। मेरे लिए

इतना ही करो, जन्म से पहले मत मारो। 'मैं बेटी हूँ', इसका अर्थ यह नहीं है कि मुझे जीने का अधिकार नहीं है। इसका अर्थ यह है कि 'मुझे भी जीने का पूरा अधिकार है' यानि, इस समाज में जीने का समान अधिकार सबको है। मात्र बेटी होने के नाते भ्रूण हत्या करना कानूनी जुर्म है। जन्म लेने के अधिकार से भी वह वंचित है।

''चाहे मुझको प्यार न देना,

चाहे तनिक दुलार न देना

कर पाओ, तो इतना करना,

जनम से पहले मार न देना

मैं बेटी हूँ, मुझको भी है

जीने का अधिकार ।''

आगे कन्या भ्रूण पूछती है कि आप लोग मुझे मारने के लिए इतने उतावले क्यों हो? बताओं मेरा क्या दोष है? क्यों मुझे इस भ्रूणावस्था में सताते हो? आप समझो कि मैं आपका ही अंश हूँ। मुझे त्याजकर मत फेंक दो। जीने का मेरा हक मुझे दे दो। ताकि इस संसार को मैं भी देख लूँ। जीने का अधिकार एवं सब देखने का अधिकार उससे छीन रहे है।

आगे, अपने दृष्टिकोण को बदलने का अनुरोध करके कन्या भ्रूण बताती है कि बदलते समय में थोड़ी नज़र बदलकर देखना चाहिए। समय के साथ चलना, उसके अनुकूल अपना विचार, दृष्टिकोण, संसार को देखने की रीति को बदलना अहम बात है। समय के बदलाव के अनुसार

अपनी बातों को, दृष्टिकोण को जरूर पुनरावलोकन करना ही चाहिए। क्योंकि अब बेटी से भी नाम चलेगा। नाम रोषन करता है बेटी के द्वारा। परंपरा को आगे बढ़ाने में अब बेटी का महत्वपूर्ण स्थान है। बेटी में अपूर्ण क्षमता एवं शक्ति है। बुढ़ापे में सहारा बन जाने की क्षमता भी बेटियों में है।

जब भ्रूण जन्म लेकर बेटी के रूप में आ जाए तो वह आँगन के इधर-उधर दौडेंगे, तुतलाहट सी बातें भी करेंगे। मानवीय गुण जैसे सेवा, करुणा, त्याग और तपस्या के नये द्वार खोलने की अपार शक्ति बेटियों में हैं। साथ ही साथ स्त्री-पुरुष कुल के लिए अपने को न्योछावार करने के लिए भी वह तैयार होती है। समाज के लिए अपने को कुर्बान करने तक को स्त्री तैयार है।

पुरुषसत्ता केन्द्रित सामाजिक अवधारणा को बदलने का आह्वान इस कविता में है। जन्म लेने के अधिकार से भी स्त्री वंचित है। समाज में लिंग समानता का संदेश इस कविता में दर्शाया है। आज स्त्री की 'मानवी' रूप पहचानना ज़रूरी है।

मुक्ति -अरुण कमल

कवि परिचय

अरुण कमल नयी संवेदना के कवि है। उनका जन्म 15 फरवरी, 1954 को नासरीगंज, रोहतास (बिहार) में हुआ था। अरुण कमल अपने व्यक्तित्व निर्माण में अपने पिता के असर को सबसे प्रभावी मानते हैं। बचपन के ऐसे कुछ तत्व होते हैं जो ज़िन्दगी भर व्यक्ति का पीछा करते हैं। उनकी कविताओं में बचपन की यादों का स्थान सर्वोपरि है।

समकालीन कवियों के बीच अनुभूति, विचार एवं अभिव्यक्ति की दृष्टि में अरुण कमल की अपनी एक अलग पहचान है। उन्होंने अपने मानवतावादी विचारों एवं वैयक्तिक अनुभूतियों को किसी भी प्रकार की कृत्रिमता के बिना आम बोलचाल की भाषा में बहुत ही सरल एवं सहज ढंग से अभिव्यक्त किया है। साहित्य की कसौटी अगर मनुष्य है तो अरुण कमल उस पर खरे उतरते है। उनका मापदंड स्वयं मनुष्य है, मनुष्य से बड़ा कुछ भी नहीं। जीवन की एकदम मामूली एवं अत्यंत क्षुद्र चीज़ों को भी उदात्त काव्य-बिंब बनाकर अरुण कमल ने समकालीन हिन्दी कविता का एक नया अध्याय रचा है। अरुण कमल ने अपनी कविताओं में वैयक्तिक अनुभूति, प्रकृति से प्यार, सौन्दर्य की उपासना, हाशिए पर पड़ी जनता से हमदर्दी, अमानवीयता के प्रति तीव्र उपहास, सांप्रदायिक सद्भाव, पर्यावरण प्रदूषण के प्रति सतर्कता, विस्थापन की भीषण समस्याओं की मार्मिक अनुभूति, गरीबी की भयानकता, मीड़िया की अपसंस्कृति, पीड़ित नारी वर्ग के प्रति संवेदना आदि को बिलकुल सहज एवं सरल भाषा में प्रस्तुत किया हैं।

अरुण कमल की काव्य भाषा चाहे खड़ीबोली हो, मगधी हो या भोजपुरी उसमें अपार व्यंजना शक्ति एवं तीव्र संवेदनक्षमता है। घर में उनकी माँ मगही बोलती थी और पिता भोजपुरी। इसलिए बचपन से ही वे इन दोनों भाषाओं का प्रयोग करते थे। उर्दु भाषा से भी उनका अत्यंत लगाव है।

काव्य रचनाएँ

काव्य संकलन - अपनी केवल धार (1980), सबूत (1989) नए इलाके में (1996) और पुतली में संसार (2004)

'कविता और समय' (1999) -आलोचनात्मक निबंध संग्रह।

कविता के लिए भारत भूषण अग्रवाल पुरस्कार, सोवियत भूमि नेहरु पुरस्कार, श्रीकांत वर्मा स्मृति पुरस्कार, रघुवीर सहाय स्मृति पुरस्कार, शमशेर सम्मान, 'नये इलाके में' पुस्तक के लिए 1998 का साहित्य अकादमी पुरस्कार।

सारांश

वैयक्तिक अनुभवों के आधार पर अपनी बात कहने की शैली में लिखी हुई एक कविता है 'मुक्ति'। इसमें मध्यवर्ग की विडंबना का चित्रण एक स्कूल अध्यापक के द्वारा प्रस्तुत किया है। सफल एवं कर्मठ अध्यापक होने के बावजूद भी अपने बेटे के बारे में सोचने का वक्त उसे मिला नहीं। अपना जीवन उसे असफल प्रतीत होने लगा। परिणामस्वरूप अपना जीवन फिर से शुरु होने का विचार उसे हो जाता है।

कवि ने आज अपने बच्चे को पढ़ाते वक्त मारा था, फलतः आज स्वयं कवि की आँखें भर आई। वह अत्यंत दुःखी हो गया । मार खाने से बच्चे पर कोई प्रभाव नहीं हुआ है। वह चुपचाप पाँव पर पाँव रखकर बैठा रहा है। उस समय मार का निशाना साँवले रंग में कवि देखते हैं।

सेवानिवृत्त स्कूल मास्टर अपने परिवार की दुःस्थिति के बारे में ठंडे मन से सोचता है। इस दुस्थिति का कारण मास्टर अपने को मानता है।

''अपने ही अन्दर दुर्गन्ध और पाँक से

भरी हुई गलियाँ

टूटे मकान, ढही भित्तियाँ

देखता हूँ अपना विनाश।''

अपना बच्चा अनपढ़ रहने का कारण मास्टर अपने को मानता है। अवकाश पाने के बाद वह समझा कि अपना बेटा कुछ भी नहीं जानता है। इसके पूर्व उसने कभी पूछा भी नहीं था, कैसे हो तुम? या क्या क्या पढ़ते हो तुम? बेटे की स्थिति को समझने पर मास्टर को लगा कि अपनी धमनियों को उत्तेजित रक्त अब हृदय को आघात पहूँचाने लगा है।

रिटायर्ड होने के बाद सुबह से शाम तक घूमते रहते है। बच्चों को ट्यूशन देते है। इसी बीच अपने बेटे के साथ रहने का मौका भी नहीं मिलता। मध्यवर्गीय मास्टरजी की नियति यही है कि वह जिस-तिस के बच्चों को पढ़ाते रहे, अपने बच्चे को पढ़ाने का समय उसके पास नहीं है।

अवकाश प्राप्त हुए अब चार साल हो गए हैं। भरा हुआ कक्षा के बारे में वह सोचता है। आज वह सेवा-मुक्त है, आज़ाद है। बच्चों को पढ़ाने में मास्टर जी सफल हुए है लेकिन अपनी गृहस्थी कमज़ोर हो गयी है। वह ज़िन्दगी को आगे बढ़ाने के लिए रास्ता ढूँढता रहता हैं। अध्यापक के हैसियत से मास्टर सफल है। लेकिन बेटा अनपढ़ निकलने के कारण अपने जीवन को असफल मानकर उससे मुक्ति की तलाश करता है। अवकाश प्राप्त होने के बावजूद अपना जीवन फिर से शुरु होने का विचार उसे हो जाता है।

प्यासा कुआँ - ज्ञानेन्द्रपति

ज्ञानेन्द्रपति हिन्दी के एक विलक्षण कवि हैं। वे समकालीन हिन्दी कविता को नयी दिशा और नूतन दृष्टि देने में सिध्दहस्त कवि हैं। उनका जन्म 1 जनवरी 1950 को झारखण्ड के एक गाँव पथरगामा में हुआ । उनकी कविताओं में समकालीन अनेक मुद्दे मुखर हुए हैं। उनकी कविताओं में सामाजिक सरोकार की चिंता प्रमुखता से देखने को मिलती है। इनकी कृतियों में प्रकृति प्रेम, हाशिए पर छोड़े गए समुदायों की चिंता, बाज़ारीकरण तथा आधुनिक जीवनशैली के दुष्प्रभावों का विवरण आदि की खुली अभिव्यक्ति हुई है। मौलिक बिंबों के ज़रिये मानवीय प्रश्नों का बहुत ही सूक्ष्म चित्रण करने की कोशिश उन्होंने की है।

कविता संग्रह : आँख हाथ बनते हुए (1970), शब्द लिखने के लिए ही यह कागज़ बना है (1981), गंगातट (2000), संशयात्मा (2004), भिनसार (2006) कवि ने कहा (कविता संचयन), मन को बनती मनई (2013) ।

काव्य नाटक : एक चक्रानगरी।

पुरस्कार : वर्ष 2006 में 'संशयात्मा' कविता संग्रह के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार।

सारांश

'प्यास कुआँ' कविता पर्यावरण के प्रति प्रेम और चिंता दर्शाती हैं। जल के स्रोत 'कुएँ' के 'प्यासा' होने का चित्रण करके कवि प्रकृति और पर्यावरण के संकट की ओर संकेत करते हैं। पर्यावरण जीवों का आधार तत्व है। लेकिन

प्रकृति पर मानव के अनियंत्रित हस्तक्षेप से प्राकृतिक संपदा का शोषण बढ़ रहा है। जल-थल संसाधनों के अवैज्ञानिक प्रबन्धन से हमारा ही अस्तित्व नष्ट हो रहा है।

'यूस एंड त्रो' - यह आज का आप्त वाक्य बन गया है। प्यासे मानव को पानी देनेवाला कुआँ आज प्यास बुझाकर फेंके गए प्लास्टिक बोतल का अड्डा बन गया है। वर्षों से पानी से समृद्ध वह कुआँ लोगों के प्यास बुझाता था। लेकिन अब उसमें पानी बन्द हुआ है, अभी मालूम हुआ कि प्यास क्या है? पहले बल्टियाँ वायु लेकर आई थी बदले में उतना पानी लेकर प्यास बुझाती थी। लेकिन अब पानी नहीं है।

अब कुआँ प्यासा है। कुआं अपना प्यास बुझाने के लिए प्रतीक्षा कर रहे है। लेकिन अब स्थिति संकीर्ण हो गयी है। आज हम प्लास्टिक बोतल से पानी पीकर, अपने प्यास को बुझाकर, बोतल सूखे कुओं में फेंक रहे हैं। आज वह कुआँ कूड़ादान के रूप में बदल गया है। प्लास्टिक बोतल से उसे भरा दिया गया है। ऐसी स्थिति बन गयी है कि प्लास्टिक भरने के कारण हैडपंप की आवाज़ भी सुनाई नहीं देती हैं।

''प्यास बुझाने को प्यासा

प्रतीक्षा करता रहा था कुआँ, महीनों

तब कभी एक

प्लास्टिक की खाली बोतल

आकर गिरी थी

पानी पीकर अन्यमनस्क फेंकी गयी एक प्लास्टिक-बोतल

अब तक हैंडपम्प की उसे चिढाती आवाज़ भी नहीं सुन पड़ती

एक गहरा-सा कूड़ादान है वह अब

उसकी प्यास सिसकी की तरह सुनी जा सकती है अब भी

अगर तुम दो पल उस औचक बुढ़ाए कुएँ के पास खड़े होओ चुप।

कुओं के पास चुपकर कुछ समय खडे होते तो मात्र उसकी सिसकियाँ ही आज सुनी जा सकती है। ये सिसकियाँ उसके प्यास की प्रतिध्वनि है।

प्राकृतिक संपदा हमारा वरदान है। उसका सदुपयोग करना चाहिए। कुआँ मानवराशी को पानी देने वाला प्रकृति का साधन है। मानव के अत्याचार के कारण कुआँ पानी हीन हो गया है। आनेवाली पीढ़ी को बनाए रखने के लिए इस कुएँ को सुरक्षित रखना हमारा कर्तव्य है। 'कुएँ' का 'प्यासा' होना और 'प्लास्टिक की खाली बोतल' के गिरने जैसे बिंबों से कवि प्रकृति प्रदूषण की भीषण स्थिति की ओर संकेत करते हैं।

इस तरह - गगन गिल

कवि परिचय

गगन गिल का जन्म 1959 दिल्ली में हुआ था। मसकालीन हिन्दी काव्य जगत के लोकप्रिय कवयित्रि है गगन गिल। वे सदा उपेक्षितों के पक्ष में रह रही हैं। स्त्री अस्मिता

को तलाशती कवयित्री है गगन गिल। उसकी अधिकांश कविताओं में खास तरह की अन्तर्मुखता पायी जाती है।

रचनाएँ

कविता संग्रह - एक दिन लौटेगी लड़की (1989), अंधेरे में बुद्ध (1996), थपक थपक दिल थपक थपक (2003), मैं जब तक आयी बाहर (2018), यह आकांक्षा समय नही (1998)

गद्य पुस्तकें :- दिल्ली में उनींदे (2000), अवाक् (2008), देह की मुँडेर पर (2018) इत्यादि (2018) ।

'आवाक्' की गणना बीबीसी सर्वेक्षण के श्रेष्ठ हिन्दी यात्रा वृत्तांतों में की गयी है।

सम्मान

भारतभूषण अग्रवाल पुरस्कार (1984), संस्कृति सम्मान (1989), केदार सम्मान (2000), हिन्दी अकादमी साहित्यकार सम्मान (2008) द्विजदेव सम्मान (2010) ।

सारांश

'इस तरह' कविता में कवयित्री ने यह बताने की कोशिश की है कि जीवन तो एक यात्रा है। एक मंजिल से दूसरे मंजिल की ओर की यात्रा है ज़िन्दगी। अंतिम मंजिल मृत्यु ही है। इसमें मृत्यु तक प्रगाामी जीवन में प्रतीत आकस्मिकता और भय का चित्रण किया गया है।

जीवन निरंतर एक यात्रा ही है। आगे बढ़ने वक्त पत्थर से पैर टकराना स्वाभाविक है। वह पत्थर नीचे घाटी में

गिर जाना भी संभव है। ऊपर चढ़ाई चढ़ने वक्त भी हम आगे रास्ते की बजाय नीचे नदी देखती है। तब उसकी सुन्दरता नहीं दिखती भयानक प्रतीत होती है। सांस लेना मुश्किल हो जाता है, दिल ज़ोर से धड़कने लगता है मानो वह सीने के पिंजरे को तोड़कर बाहर आ गए हो। आँखों में काली धुँध छा जाती है इसी वजह से कुछ भी नहीं दिखाई देती है। तब असमंजस्य में पड़ जाते है कि ऊपर चढ़े या नीचे जाए।

हमारे लिए असमंजस्य की स्थिति है लेकिन प्रकृति तब भी संतुलित है। चट्टान में से नन्हें नीले फूल नज़र आते है। वही से उड़ आई तितली बाहों को छूकर उड़ जाती है। घास हल्के से अपना सिर उठाती है। यह सब देखकर हौले से हम भी मुस्कराते हैं।

फूल, तितली और बच्चे सब प्रकृति में अकेले मुस्कराने वाले हैं। साथ ही कुछ बूढ़े भी अकेले होने के ऐसे अवसर पर मुस्कुराते रहे हैं। सब अकेले आगे चलते है बीच में रुकते है और मुड़ते भी है। लेकिन वे अकेले नहीं है क्योंकि प्रकृति का सुन्दर स्पर्श यानि तितली का स्पर्श उनके अकेलापन का मनोभाव दूर करता है। मतलब यह है कि प्रकृति हमेशा हमारा साथ है।

एक पत्थर से दूसरे पत्थर तक पैर सावधानी से रखकर रुक-रुक कर हम चोटी तक पहुँच जाते हैं। तब रास्ते का सभी दृश्य फूल, तितली, पत्थर सब अदृश्य हो जाती है। तब हमें मालूम होगा कि जीवन की आकस्मिकता पर हम नादान ही है। पैर से टकराए पत्थर के स्थान पर हम घाटी में गिर जाए तो मृत्यु सुनिश्चित है।

''न वह पत्थर

जो एक दोपहर

पैर से टकराया था

आप लुढ़कने वाले थे नीचे घाटी में

कैसे नादान थे आप

सोचते थे तब

गिरे तो मरे

जानते न थे

इसी तरह होती हैं यात्राएँ''

जीवन निरंतर यात्रा है, मृत्यु तक की यात्रा । मृत्यु तक हम आगे बढ़ते हैं बढ़ना ही चाहिए। बीच बीच में बाधा होना स्वाभाविक है, फिर भी आगे बढ़ना चाहिए। जीवन के ऐसे संकट मुहूर्त से आगे बढ़ना वास्तविक रूप से जीवन रूपी यात्रा का शुभारंभ है।

प्रश्न और उत्तर

प्र : मौसियाँ किसकी कविता है? इसका मूल विषय क्या है?

उ : अनामिका की कविता है 'मौसियाँ'। इस कविता में संबंधों का परंपरागत मूल्य, नवयुग का यांत्रिक जीवन आदि का चित्रण किया गया है। बीसवीं सदी तक आते-आते मौसियों की परंपरा समाप्त हो गयी है। इसलिए कहा गया है कि मौसीपन, बुआपन, चाची पंथी, अम्मागिरी तक कूडागाडी में डालकर बाहर फेंका गया है। कवयित्री महसूस करती है कि ये सब मानवीयता को बनाए रखने का अनिवार्य तत्व है।

प्र : बेटी कविता किसकी है और भ्रूण का क्या उम्मीद है?

प्र : 'मुक्ति' कविता का मुख्य विषय

प्र : कुआ का क्या हाल है?

प्र : 'इस तरह होती है यात्राएँ' - इसमें क्या अर्थ प्रतीत है?

प्र : गगन गिल के अनुसार यात्राएँ कैसे शुरु होती है?

Module III

Letter Writing

पत्र लेखन

पत्र लेखन असल में एक कला है। यह मानव सभ्यता के विकास की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। मानव के सामजिक जीवन में पत्र- व्यवहार का महत्वपूर्ण स्थान है। सामाजिक प्राणी होने के कारण मनुष्य अपने हाव-भावों तथा विकार-विचारों को दूसरों के सामने प्रकट करना चाहता है। दूरस्थ व्यक्तियों के साथ इस प्रकार के आदान-प्रदान के लिए एक माध्यम के रूप में पत्र-व्यवहार का अपना विशेष स्थान है। हमारा समाज दिन-ब- दिन विकास की ओर बढ़ता जा रहा है। इसके अनुसार पत्र-व्यवहार का ढंग भी विकसित हो गया है।

पत्र-व्यवहार को हम सुविधा के लिए चार प्रकारों में बाँट सकते हैं। वैयक्तिक या व्यक्तिगत पत्र, सामाजिक पत्र, व्यावसायिक पत्र और कार्यालयी पत्र।

व्यक्तिगत पत्र- अपने सगे- संबंधियों तथा मित्रों को लिखे जाने वाले पत्र इसके अन्तर्गत आते हैं। इन्हें निजी पत्र भी कहते हैं।

सामाजिक पत्र- सामाजिक गतिविधियाँ जैसे निमंत्रण देना, बधाई, सन्ताप सूचित करता, इनका जवाब आदि परिचित या अपरिचित लोगों को लिखे जानेवाले पत्र इसके अन्तर्गत आते हैं।

व्यावसायिक पत्र- व्यापारिक तथा व्यावसायिक संस्थाओं, बैंकों आदि के नाम लिखे जाने वाले सभी प्रकार के पत्र तथा नौकरी पाने के लिए लिखे जाने वाले आवेदन पत्र आदि इनके अन्तर्गत आते हैं।

कार्यालयी पत्र- जो पत्र सरकारी एवं अर्धसरकारी संस्थाओं के कार्यालयों तथा अन्य कार्यालयों द्धारा भेजे जाते हैं ये पत्र कार्यालयी पत्र कहलाते हैं। ज्ञापन, निविदा प्रपत्र, अधिसूचना आदि इस विभाग के अन्तर्गत आते हैं।

व्यावसायिक पत्र

व्यावसायिक पत्र की परिभाषा- कारोबार, व्यापार व धंधा से जुड़े पत्राचार व्यावसायिक पत्र के तहत आते हैं। मतलब कारोबार, व्यापार व नौकरी-पेशा के संदर्म में जो पत्र लिखे जाते हैं उन सबको सामान्यतः व्यावसायिक पत्र कह सकते हैं।

व्यावसायिक पत्र का स्वरूप

१. **शीर्षक** (Heading) अक्सर करोबार सम्बन्धी पत्र संस्था या कंपनी के पत्र पैड (Ietter pad) में लिखा जाता है। इसमें शीर्षनाम (Letter head) छपा रहता है। इसलिए प्रेषक (from) लिखने की जरूरत नहीं है। सिर्फ दाहिने तरफ तारीख लिखी जाती है।

२. **भीतरी पत्र** (inside address) जिसको पत्र भेजा जाता है (प्रेषक) उसका नाम व पता लिखा जाता है।

३. **संबोधन** (salutation) प्रिय महोदय, प्रिय गुप्तजी आदि शब्दों से संबोधन दिया जाता है।

४. **विषय और संदर्भ की सूचना**- पत्र का विषय और उससे जुड़े कोई पत्र पहले लिखा गया है तो उसकी भी सूचना दी जाती है।

५. **पत्र का कलेवर**- (body of the letter) यही पत्र का प्रमुख हिस्सा है। पत्र के द्वारा जो सन्देश देने का विचार है उसकी पूरी जानकारी दी जाती है।

६. **मानार्थ समाप्ति** (complimentary close)- पत्र के कलेवर के नीचे दाहिने भाग में लिखा जाता है जैसे- आपका, भवदीय आदि।

७. **स्वनिर्देश और हस्ताक्षर**- मानार्थ समाप्ति के नीचे प्रेषक के हस्ताक्षर, नाम, पदनाम आदि दिए जाते हैं।

८. **अनुलग्न** (enclosure) की सूचना- यदि पत्र के साथ के साथ और कोई चीज भेजी जाती है तो उसकी सूचना पत्र के अन्त में बाएँ तरफ दी जाती है।

व्यक्तिगत पत्र (Personal Letter)
पिता के नाम पुत्र का पत्र

आत्माराम पुरुष होस्टल,

अहमदाबाद,

२३-१०-२०१५.

पूज्य पिताजी,

सादर प्रणाम। पिछले मंगलवार को आप का पत्र मिला। यह जानकर मुझे खुशी हुई कि आप और अम्मा सकुशल हैं।

मैंने सोचा था कि अगले हफ्ते गाँव पहुँचकर आप दोनों से मिलकर लौट आऊँ। लेकिन नवम्बर दूसरे हप्ते से हमारी सेमेस्टर परीक्षा शुरू होनेवाली है। इसलिए मैं आ नहीं पाऊँगा। परीक्षा के बाद हमें दस दिन के लिए अध्ययन यात्रा भी है। यह भी नहीं अब छात्रावास शुल्क भी देना है। मेरे पास आवश्यक पैसा भी नहीं। इसलिए आप मुझे जल्दी से जल्दी ८०००/- रुपये भेज दीजिए। मैं क्रिससस की छुट्टी पर घर आऊँगा। माताजी को भी मेरा प्रणाम।

आप का बेटा,
रोहित

लिफाफे पर पता...

बड़े भाई छोटी बहन के नाम पत्र

बैंगलुर,

१२-६-२०१५.

प्यारी मिन्नू,

पिछले दिन अम्मा का पत्र मिला। उन्होंन लिखा है कि तुम्हारी परीक्षा आनेवाली है । कैसी है तुम्हारी पढाई, ठीक से चल रही है न? तुम समझती होगी कि दसवों की यह परीक्षा तुम्हारे जोवन का पहला महत्वपूर्ण पड़ाव है और आगे के जीवन की नींव है। हम सब चाहते हैं कि तुम उच्च शिक्षा प्राप्त करके उन्नति के मार्ग पर आगे बढ़ो। यह तभी संभव होगा, जब तुम अपनी पढ़ाई पर पूरा ध्यान दोगी।

अब तुम्हें पढ़ाई में पूरी तरह लग जाना चाहिए। एक विषय को छान-बीन कर देखो और अपनी कमजोरियों को दूर करो। प्रश्नों को लिख- लिखकर याद करो। ऐसा करने से लिखने का आभ्यास भी हो जाएगा।

मुझे आशा है कि तुम मेरी बात पर अच्छी तरह ध्यान दोगी और परीक्षा लिखने में सक्षम हो जाओगी। हम सब की प्रार्थना एवं आशीर्वाद तुम्हारे साथ हमेशा है। अम्मा और बापू से भी मेरा नमस्कार कहना।

तुम्हारा प्रिय भैया
सुभाष शर्मा

मित्र को परीक्षा में प्रथम आने के लिए बधाई पत्र

५/१२, मंजू विहार
सुभाष मार्ग,
नई दिल्ली
१८-१०-२०१४

मेरे प्रिय राकेश,

कैसे हो, कुशल है न? आशा है न? आशा है कि माताजी और पिताजी सब कुशल हैं। तुमसे मिलकर बहुत दिन हो गये। आज के समाचार पत्र में मुझे यह पढ़कर बहुत खुशी हुई कि बी.ए. परीक्षा में तुम सबसे प्रथम आये हो। बधाई हो मित्र बधाई हो।

इच्छा है कि अभी तुम से मिलूँ। लेकिन ! मैं अब आ नहीं पाऊँगा। हाँ, अब तुम्हारा इरादा क्या है? नौकरी करने का या आगे पढ़ने का? मेरी इच्छा है कि तुम आगे पढ़ो और जीवन में ऊँचे पद तक पहुँचो। आगले महीने मैं गाँव आनेवाला हूँ। तब जरूर मिलूँगा। तब तक विदा।

तुम्हारा प्यारा मित्र

जीवन अशोक

आवेदन पत्र (Application Letter)

भुगतान करने का अनुरोध करते हुए लिखा गया पत्र

आगेल ग्लास कंपनी
उत्कृष्ट किस्म का काँच
निर्माता, एरणाकुलम्
डॉ. पूर्णचन्द्र प्रकाश
बिक्री प्रबंधक

अंबलमुगल
तारीख

सेवा में

श्री के. कृष्ण कुमार
संतोष स्टोर्स, कालिकट रोड
मलप्पुरम।

प्रिय महोदय,

विषय : भुगतान करने का अनुरोध
संदर्भः (१) आपका आदेश, पत्र संख्या एस. १४५/९४
दिनांक.....
(२) हमारा पत्र संख्या, ओ.ग. क ४१२/८/९८
दिनांक.....

आपके उपर्युक्त आदेश के अनुसार हमने १६ मई ९४ को दस हजार रुपये मूल्य का काँच माल-गाड़ी द्धारा भेज दिया। रेलवे रसीद संख्या १८३४/९४ भारतीय स्टेट बैंक मलप्पुरम शाखा को

भेज दी थी। सबकी सुचना पत्र द्धारा (संख्या ओ. ग. ४१२/८/९४ दिनांक.....) दी थी और पत्र के साथ बीजक संख्या ४४५ भी संलग्न किया था।

लेकिन अफसोस की बात है कि एक महीने के बाद भी भुगतान व माल छुड़ाने की सूचना हमें नहीं मिली।

कृपया करके शीघ्र ही माल छुड़ाकर भुगतान कीजिए । देर मत कीजिए।

धन्यवाद
आपका व्यवस्थापक
आगेल गिलास कंपनी

लिपिक पद के लिए आवेदन पत्र

कोच्चिन,

२५-८-२०१४

प्रेषक
विनायक वेंकिटेश,
नन्दनम,
कटवन्त्रा, कोच्चिन।

सेवा में
प्रबन्धक,
जयभारत पब्लिकेशन,
कोषि़कोड।

प्रिय महोदय,

२०-८-२०१४ के मलयालम मनोरमा पत्रा में आप के संस्था का विज्ञापन देखा था। विज्ञापन से मुझे मालूम हुआ कि आप के दफ्तर में लिपिक का एक पद रिक्त है। इस पद के लिए मैं अपने को योग्य समझता हूँ। मेरी शैक्षणिक योग्यताएँ, अनुभव आदि नीचे दिया है।

नाम - विनायक वेंकिटेश।
पता - नन्दनम, कटवन्त्रा, कोच्चिन।
जन्म तिथि- २२-८-१९९०

शैक्षणिक योग्यताएँ- बी. कॉम (प्रथम श्रेणी), केरल विश्व विद्यालय।
पी.जी.डी.सी.ए (कंप्यूटर), केरल सरकार.
एम.कॉम (पढ़ाई जारी, निजी तरफ से)

अनुभव- दो वर्ष तक स्थानीय संस्था में लिपिक के रूप में काम किया है।

मेरे आचरण, योग्यता तथा अनुभव संबन्धी प्रमाण पत्रों की प्रतिलिपियाँ भी अन्य प्रमाण पत्रों की प्रतिलिपियों के साथ संलग्न है।

आशा है कि प्रस्तुत पद मुझे देकर आप मेरी मदद करेंगे।

संलग्न-सारे प्रमाण पत्राों की प्रतिलिपियाँ

आप का विनीत
(हस्ताक्षर)
विनायक वेंकिटेश

लेखाकार के पद के लिए आवेदन पत्र-

एम.जी रोड, एरनाकुलम
१६-१०-२०१२

प्रेषक
राधा कृष्ण,
८/२४, निकुंज,
एम. जी रोड, एरनाकुलम।

सेवा में
प्रबन्धक,
बहादूर कोट्टन मिल्स,
तिरुच्चिरप्पल्लि।

प्रिय महोदय,

२७-९-२०१२ के दि हिन्दू पत्र में प्रकाशित विज्ञापन से ज्ञात हुआ कि आपके कार्यालय में एक लेखाकार की आवश्यकता है। उक्त पद के लिए मैं प्रार्थी हूँ। मैं पच्चीस साल का युवक साल का युवक हूँ। विश्वास है कि लेखाकार का काम मैं सफलतापूर्वक निभा सकता हूँ।

मेरी शैक्षणिक योग्यताएँ-

१. बी. कॉम-प्रथम श्रेणी (कालिकट विश्वविद्यालय)
२. टाली (छह महीने का डिप्लोमा कोर्स) पास हुआ।

कंपूटर परिज्ञान

अनुभव-सन् २००९ से स्थानीय मिल में लेखाकार का काम कर रहा हूँ आशा है, इस प्रार्थना-पत्र पर अनुकूल निर्णय लेकर मुझे अनुगृहीत करेंगे। योग्यता और अनुभव संबन्धी प्रमाण पत्रों की प्रतिलिपियाँ इसके साथ भेज रहा हूँ।

संलग्न- प्रमाण पत्र की प्रतिलिपियाँ-४

आपका
(हस्ताक्षर)
राधाकृष्णन

सहआचार्य के पद के लिए आवेदन-पत्र

कडुत्तुरुत्ति
१५-५-२०१४

प्रेषक
राधिका वर्मा,
आनन्द विहार,
कडुत्तुरुत्ति,
कोट्टयम।

सेवा में,
दि मैनेजर,

डी.बी, कॉलिज, तलयोलप्परम्बु।

विषय- सहआचार्य के पद लिए आवेदन पत्र

मान्य महोदय,

१०-५-१४ के मातृभूमि दैनिक पत्र में आप का विज्ञापन देखा। उससे पता चला कि आप के कॉलिज के इतिहास विभाग में सहआचार्य का पद रिक्त है। उक्त पद के लिए आवश्यक योग्यताएँ मेरे पास हैं। मेरी योग्यता एवं अनुभव निम्न लिखित है।

1. एम. ए. हिस्ट्री प्रथम श्रेणी (केरल विश्वविद्यालय)
2. एम. फिल. हिस्ट्री ए.ग्रेड. (कालिकट विश्वविद्यालय)
3. पी.एच.डी.हिस्ट्री (कालिकट विश्वविद्यालय)

अध्यापन अनुभव दो वर्ष स्वसहायता प्राप्त कॉलिज में

अब मेरी आयु २९ वर्ष है। उपर्युक्त पद पर आप मेरी नियुक्ति करें तो मैं आपकी आभारी रहूँगी। प्रमाण पत्रों की प्रतिलिपियाँ इसके साथ संलग्न है।

आपकी
(हस्ताक्षर)
राधिका वर्मा

क्रयादेश के पत्र (Order letter)

पुस्तकें भेजने के लिए आदेश पत्र

मार्डेन बुक स्टाल
मावूर रोड, कोषि़क्कोड
पत्र संख्या : १८०/१५

९-६-२०१५

सेवा में
सर्वश्री अमन पुस्तक प्रकाशन
कानपुर- १

प्रिय महोदय,

हमें इस अकादमिक वर्ष से लेकर हिन्दी पुस्तकों की मांग ज्यादा हो रही हैं। आपसे निवेदन है कि आप हमें निम्नलिखित पुस्तकें वा. पी. पी द्धारा भेजने की कृपा करें।

1. रामचरितमानस- तुलसीदास --------३० प्रतियाँ
2. भाषा विज्ञान- भोलानाथ तिवारी-----३५ प्रतियाँ
3. निर्मला - प्रेमचन्द----- ३५ प्रतियाँ
4. चन्द्धगुप्त (नाटक)- जयशंकर प्रसाद- ३० प्रतियाँ

पुस्तकों की पैकिंग अच्छे ढंग से करावें। आशा है कि आप २०ऽ डिस्काउंट दे देंगे। पुस्तक और बिल प्राप्त होते ही भुगतान हो जाएगा।

आशा है, आप हमारे क्रयादेश की पूर्ति शीघ्र ही करेंगे।

भवदीय

कृते मोर्डेन बुक स्टाल

गंगाघर राव

डी. वी.डी प्लेयर के लिए क्रयादेश पत्र

सरगाम इलेक्ट्रोनिक्स
त्रिशिवपेरूर

२४-९-२०१३

पत्र संख्या : १३०/१३

सेवा में
सर्वश्री हिन्दुस्तान इलेक्ट्रोनिक्स ट्रेडर्स,
(थोक व्यापारी), नई दिल्ली-२

प्रिय महोदय,

सेवा में निवेदन है कि 'सोनी' के बीस सेट डी.वी.डी.प्लेयर शीघ्र ही भेज देने की कृपा करें।माल रेल गाड़ी से भेजें तो अधिक सुविधा होगी। पैकिंग अच्छी तरह से करा दें जिससे कि माल खराब न हो। क्रयादेश से संबन्धित बीजक रकम से नियत कमीशन काटकर शेष को बिल्टी सहित बैंक ऑफ ट्रावनकोर, त्रिश्शिवपेरूर द्धारा भेजने की कृपा करें।

आशा है, आप माल तुरंत भेजकर हमें कृतार्थ करेंगे.

आपका कृते,
सरगम इलेक्ट्रोनिक्स
जनार्दन

पिल्लै
व्यवस्थापक

शिकायती पत्र (Complaint Letter)

मँगवाये माल की क्षति होने पर शिकायत तथा क्षतिपूर्ति माँगते हुए पत्र

महिमा टेक्स्टैल

(कपड़ों का थोक व्यापारी) चेर्त्तला

२८-४-२०११

पत्र संख्या :सी/२-११

सेवा में

प्रबन्धक,
रामप्रकाश एण्ड सन्स,

मेटेटुपालयम,
कोयम्बत्तूर।

प्रिय महोदय,

दिनांक १२-४-२०११ के हमारे क्रयादेश के अनुसार आपका भेजा माल आज प्राप्त हुआ। लेकिन खेद के साथ हमें यह कहना पड़ता है कि माल भेजते समय आपकी ओर से थोड़ी असावधानी हो गयी है।

हमने आपसे आपसे अच्छी किस्म की रेश्मी साडियाँ ही माँगी थी, पर आपने भूल से साधारण स्तर की कोदृन साड़ियाँ ही भेज दी हैं। यह भी नहीं उनमें से कुछ पुरानी एवं फटी हुई भी है।

इन दिनों हम ग्राहकों की माँग पूरी नहीं कर पा रहे हैं। ऐसी स्थिति में हमें ५००००/- रुपये का नुकसान हुआ है।

इसलिए प्रार्थना है कि आप उक्त रकम की क्षतिपूर्ति करें। हम चाहते हैं कि आपसे हमारे व्यापारिक संबन्ध बने रहें।

आपका कृते,
महिमा टेक्स्टैल्स
रघुनन्दन (प्रबन्धक)

डाक अधिकारी को शिकायती पत्र

अक्षर प्रकाशन
(पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता)
१६, सुभाष मार्ग, दिल्ली-११

क्रमांक : ११४/ १२

८-३-२०१२

सेवा में

पोस्ट मास्टर महोदय,
मुख्य डाकघर,
दिल्ली-११.

प्रिय महोदय,

गत ४ फरवरी को हमने एक पार्सल रजिस्ट्री द्धारा मुख्य डाकघर से श्री नवनीत कृष्णन, कोन्नोत्त् मना, चेलामदृम, ओक्कल पोस्ट, एरनाकुलम के नाम से भिजवाया था। एक महीना बात गया है, किन्तु वह पार्सल अभी तक उन्हें नहीं मिला है। उस रजिस्ट्री की रसीद संख्या पी. १४३ है।

कृपया इस मामले में उचित कार्यवाही कर हमें सूचित करने का कष्ट करें।

आशा है आप से शीघ्र उत्तर मिलेगा।

भवदीय
किशोर श्रीवास्तव
विक्रय व्यवस्थापक

पुस्तक विक्रेता को शिकायती पत्र

ज्ञान मण्डल
स्टेट बैंक के सामने,
बेगम हजरत महलपार्क,
लखनऊ
२० जनवरी,१९९६

सेवा में

संचालक
वैशाली प्रकाशन,
गांध मैदान,
पटना।

महोदय,

हमारी संस्था पिछले दस वर्ष से आपके यहाँ से पुस्तकें भी कभी संख्या में कम नहीं निकलीं। परन्तु बड़े खेद के साथ लिखना पड़ रहा है कि आदेश संख्या २४५ के अनुसार आपने जो पुस्तकें भेजी हैं वे आपकी कीर्ति व प्रतिष्ठा के अनुरूप नहीं है। पुस्तकें न केवल कटी-कटी हैं अपितु संख्या में भी कम हैं। कई पुस्तकों के तो पुराने संस्करण ही भेज दिये हैं, जबकि अन्य दुकानदारों को उनके नवीन संस्करण भेजे गये हैं। इतना ही नहीं, इस बार कमीशन भी आपने कम दिया है। आपसे निवेदन है कि यदि आप हमारे साथ व्यापारिक सम्बन्ध बनाए रखना चाहते हैं तो हमारी क्षतपूर्ति

करने का कष्ट करें। यदि आपने ऐसा न किया तो हम आपकी संस्था के साथ सम्बन्ध-विच्छेद करने की बाध्य होंगे।

भवदीय
रामकुमार
ज्ञानमण्डल प्रकाशन

रेलवे अधिकारी को शिकायती पत्र

कृष्णन एण्ड ब्रदर्स

कांच के व्यापारी

कोषि़क्कोड

क्रमांक : १७५/१३

२४-८-२०१३

सेवा में

प्रधान व्यावसायिक मैनेजर,
प्रधान व्यावसायिक मैनेजर,
दक्षिणी रेलवे,
चेन्नै।

प्रिय महोदय,

हमने आज नेशनल ग्लास फैक्टरी, चैन्नै द्धारा भेजी पन्द्रह ग्लासों की पेटियाँ छुड़ाई हैं। ये पेटियाँ चेनै से रेलवे के रसीद नं. २१० द्धारा १९ आगस्त २०१३ को भेजी गयी थीं। पेटियों की जाँच

करने पर चार पेटियाँ टूटी हुई दिखाई पड़ीं। कोषि़क्कोड रेलवे स्टेशन में रसीद पर लिखवा भी लिया है।

टूटी हुई पेटियाँ खोलने पर मालूम हुआ कि चारों में से कुल १०० काँच निकाल लिये गये हैं। ग्लास फैक्टरी से प्राप्त बीजक के अनुसार प्रत्येक पेटी में सौ- के हिसाब से काँच रखे गये थे। १०० काँचों के गायब हो जाने से हमें १५००/- रुपये की हानि हुई है। हमने पेटियाँ कोषि़क्कोड के स्टेशन मास्टर के सामने ही खोली थीं। आपकी जानकारी के लिए बीजक की एक नकल और स्टेशन मास्टर के सामने ही खोली थीं। आपकी जानकारी के लिए बीजक की एक नकल और स्टेशन मास्टर का प्रमाण पत्र संलग्न कर भेज रहे हैं।

आप से निवेदन है कि उक्त बात पर आवश्यक कार्रवाई करके हमें क्षतिपूर्ति मिलने में सहायता पहुँचायें।

आपका

कृते,कृष्णन एण्ड ब्रदर्स

कृष्णन नायर

प्रबन्धक।

व्यावसायिक पत्र (Business Letters)

बैंक संबंधी पत्र (Letters regarding banking)

नये ग्राहक का स्वागत

प्रेषक,

इंडियन ओवरसीस बैंक,
पेरुम्बावूर

सेवा में

मणिलाल,
पवित्रम,
तुरुत्ति पोस्ट,
पेरुम्बावूर।

प्रिय महोदय

हमारे लिए सचमुच ही बड़ी प्रसन्नता का विषय है कि आपने हमारी शाखा में अपना खाता खोला है। आपका हम हार्दिक स्वागत करते हैं। आपसी समझ, विश्वास और सद्भाव के वातावरण में हमारे स्थाई संबन्धों का निर्माण और विकास हो, यही सुमधुर वेला में हमारे मंगल कामनाएँ हैं।

हम इसके साथ अपनी शाखा द्धारा दी जाने वाली विभिन्न सेवाओं की भेज रहे हैं। इनमें से कई सेवाएँ आपको उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं।

बैंकिंग विषयक हर मामले में हमारे परामर्श या मार्गदर्शन की आवश्यकता हो, आपका हम स्वागत करेंगे। हमारी सेवाओं को

बेहतर बनाने के संबन्ध में आप के यदि कोई सुझाव हों तो निस्संकोच लिखें।

उत्कृष्ट सेवाओं के सदैव तत्पर,

भवदीय,

(माधव मुकुन्द)

शाखा प्रबन्धक

संयुक्त खाता खोलने के लिए अनुरोध

पंजाब नेशनल बैंक,
वडकरा।

२६-९-२०१५

सेवा में

निषिता,
पारिजातम् हौस, वडकरा।

मान्यवर,

हमें दिनांक २०-९-२०१५ का पत्र प्राप्त हुआ जिसमें आपने हमारे यहाँ अपना खाता परिचालित करने के लिए श्रीमती उषादेवी को प्राधिकृत करने की इच्छा प्रकठ की है।

इस संदर्भ में हमारा सुझाव है कि आप अपना खाता संयुक्त खाते में परिवर्तित करवा दें । इसका सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि संयुक्त खातेदारों में से किसी के भी दुर्भाग्यपूर्ण निधन पर खाते की

शेष रकम, बिना किसी कानूनी औपतारिकता के उत्तरजीवी को मिल सकेगी।

आप सहमत हैं तो संलग्न फार्म में संबन्धित व्यक्ति के बारे में आवश्यक विवरण देते हुए उनंके नमूने के हस्ताक्षर सहित उसे हमारे पास भिजवाने का कष्ट करें।

सदैव सर्वोत्तम सेवाओं के लिए तत्पर,

भवदीय,
रत्नकुमार नय्यार शाखा प्रबन्धक

चैक के खो जाने पर भुगतान रोकने के लिए पत्र

प्रेषक २८-४-२०१४

श्री. राजन पणिक्कर.ओ.वी,
सितारा,
तानूर पोस्ट,
तानूर,
मलप्पुरम

सेवा में

शाखा प्रबन्धक,
सिंडिकेट बैंक, कालिकट-२

विषय : चालू खाता नं ४३२ में चैक का भुगतान रोकना।

प्रिय महोदय,

मैंने पिछले १५-४-२०१४ को चैक संख्या सी /२३४५, जिसकी रकम १५०००/- रुपये थी, श्री. हेमन्त कुमार के नाम में काटा था।

अभी उससे सूचना मिली है कि यह चैक उससे खो गया है।

इललिए सविनय निवेदन है कि इस चैक का भुगतान न कीजिएगा।

भवदीय

राजन पणिक्कर,

एक ग्राहक

बैंक पत्र
(ड्राफ्ट खो जाने पर भुगतान रोकने का अनुरोध)

प्रेषक
राम मनोहर
श्यामदास

१५- ए पंजाबी बाग

दिल्ली- १

सेवा में

प्रबन्धक
भारतीय स्टेट बैंक,
वर्ली शाखा,
मुम्बई।

विषय : ड्राफ्ट सख्या सी/डी ३२१५७५ दिनांक ०३-०४-१९९५ के भुगतान पर रोक।

महोदय,

निवेदन है कि हमने भारतीय स्टेट बैंक की पंजाबी बाग शाखा, दिल्ली से दस हजार रुपए का उपरोक्त संख्या का ड्रा-ट बनवाकर अपने व्यापारी श्री कृष्ण बिहारी शर्मा को भेजा था। अब श्री कृष्ण बिहारी शर्मा ने सूचना भेडी है कि वह ड्राफ्ट उनसे कहीं खो गया है। इस संबंध में आपसे अनुरोध है कि यदि आपके पास उपर्युक्त ड्राफ्ट आए तो कृपया उसका भुगतान न करें।

हम इस पत्र की प्रतिलिपि ड्राफ्ट जारी करने वाली बैंक शाखा को भी सूचनार्थ भिजवा रहे हैं।

सधन्यवाद

भवदीय
दीवान चंद
कृते राम मनोहर शयाम दास

बीमा संबन्धी पत्र

(Letters regarding Insurance)
जीवन बीमा की रकम माँगने का पत्र

३२/७, कोयिलांडी
२८ मार्च, २०११

सेवा में
श्री डिविषनल मैनेजर,
भारतीय जीवन बीमा निगम, कलिकट-१

विषय : पालिसी संख्या ३४२१२ श्री सुन्दरदास के जीवन पालिसी के संबन्ध में।

प्रिय महोदय,

मैंने ४ मार्च १९८६ को जीवन के संबन्ध में एक लाख (१००००)/- रुपये का बीमा करवाया था। मेरी बीमा पालिसी की संख्या १८७६१५ है। पालिसी की अवधि ४ मार्च, २०११ को पूरी हो चुकी है।

अतः विनम्र निवेदन है कि उक्त पालिसी की रकम का मुगतान जल्दी करने का प्रबन्ध करें।

भवदीय
श्री. सुन्दरदास

अग्नि-बीमा से हानि की पूर्ति के लिए पत्र

लक्ष्मी टेक्स्टैल्स (कपड़ों का थोक विक्रेता)
रौंड नोर्थ, तृश्शूर

१०-९-२०११

सेवा में

श्री मैनेजर,
भारतीय बीमा कंपनी, तृश्शूर।

विषय : अग्नि बीमा पालिसी संख्या-बी ४०६०

प्रिय महोदय,

हमें यह सूचित करने में बड़ा खेद होता है कि हमने आपसे बीमा पत्र संख्या ४०६० के अनुसार जिस टेक्स्टाइल्स का अग्नि-बीमा कराया था वह ७-९-२०११ को आग लग जाने से पूरा जल गया है। इस टेक्स्टाइल्स का अग्नि-बीमा एक वर्ष के लिए बीस हजार रुपये का कराया था आग लग जाने का कारण अभी तक अज्ञात है।

इस विपत्ति के कारण हमें १७०००० /- रुपये का नुकसान हुआ है। इसलिए आप से प्रार्थना है इस रकम का भुगतान करने का प्रबन्ध करें।

आशा है, आप घटना स्थल का जाँच तुरंत करायेंगे और भुगतान शीघ्र दिलाने की कृपा करेंगे।

आपका कृते,
लक्ष्मी टेक्स्टैल्स
माधवदास
व्यवस्थापक

बीमा पत्र

जीवन बीमा की रकम के भुगातान के लिए

प्रेषक
रमानाथ अग्रवाल
३५/ ए अकबर रोड
नई दिल्ली- १

सेवा में

शाखा प्रबन्धक
जीवन बीमा निगम
नई दिल्ली शाखा
नई दिल्ली-१

सन्दर्भः जीवन बीमा पॉलिसी सख्या ४९३२१-एस

मान्यवर,

निवेदन है क मेरी जीवन बीमा पॉलिसी (संख्या उपरोक्त) गत वर्ष अगस्त में पूर्ण हो चुकी है। मैंने १९७९ में पचास हजार का १५ वर्षीय बीमा कराया था। मैंने अपनी मासिक किश्तों क राशि नियमित रूप से जमा कराई है। जिनकी रसीदें मेरे पास सुरक्षित हैं। अन्तिम किश्त ३१ जुलाई, १९९४ को भेजी गयी थी। आपसे अनुरोध है कि मेरी पॉलिसी की पूरी रकम, लाभांश और व्याज सहित यथा-शीघ्र भिजवाने की व्यवस्था करें।

धन्यवाद सहित

भवदीय

दिनांक २० सितम्बर, १९९४ राजमोहन

संलग्न- १. जीवन बीमा पालिसी संख्या ४९३२१- एस
२. उपर्युक्त पालिसी की अन्तिम किश्त की रसीद संख्या ६२२ दिनांक ३१ अगस्त, १९९५

पारिभाषिक शब्दावली
(Technical Terminology)

1. Abstract - उपसंक्षेप
2. Acadamic – विद्या सभा
3. Acceptance – स्वीकृति
4. Accident- दुर्घटना बीमापत्र
5. Account- लेखा
6. Accountant- लेखापाल
7. Accountant General- महालेखापाल
8. Accounts Department- लेखा विभाग
9. Acknowledgment- स्वीकृति
10. Act - अधिनियम
11. Action- कार्यवाही
12. Adaptation- अनुकूलन
13. Additional Deputy Secretary- अतिरिक्त उप सचिव

14. Adjournment - स्थगन

15. Administration - प्रशासन

16. Administrator – प्रशासक

17. Admiral General- महानौसेनापति

18. Advance - अग्रिम-धन

19. Advance Payment - अग्रिम भुगतान

20. Advisory - सलाहकार

21. Agreement- संविदा

22. Allegation - अभियोग

23. Allocation - बँटवारा

24. Allotment - बँटनी

25. Allowance - भत्ता

26. Amalgamation -एकीकरण

27. Amendment- संशोधन

28. Amount - धनराशि

29. Anticipatory- प्रत्याशित

30. Appointment - नियुक्ति

31. Approval- अनुमोदन

32. Assessment - कर निर्धारण

33. Assistant - सहायक

34. Assistant Inspector &

General - सहायक महा निरीक्षक

35. Benefit - लाभ

36. Bill - (बिल)

37. Bonafide - प्रामाणिक

38. Bond - प्रतिज्ञापत्र

39. Bonus - लाभांश

40. Budget - बजट (आय- व्ययक)

41. Cabinet - मंत्रिमंडल

42. Cancellation- रद्दीकरन

43. Candidate - परीक्षार्थी

44. Capital - पूँजी

45. Capitalization - पूँजीकरण

46. Cash book - रोकड बही

47. Cash transaction - नकदी लेन-देन

48. Casual Leave - आकस्मिक अवकाश

49. Caution money - जमानत

50. Centralization - केन्द्रीयीकृत

51. Certificate - प्रमाण पत्र

52. Check – जाँच

53. Cheque - धनादेश (चैक)

54. Chief Justice - मुख्य न्यायाधिपति

55. Circular - परिपत्र

56. Civil - जानपद

57. Civil Aviation - जानपद उड्डयन

58. Clarification - स्पष्टीकरण

59. Classification - वर्गीकरण

60. Clerk - लिपिक

61. Client - मुवक्किल (ग्राहक)

62. Code - संहिता

63. Collaboration - सहयोग

64. Command - समादेश

65. Commandant - समादेशाक

66. Commission - आयोग

67. Committee - समिति

68. Communique - विज्ञाप्ति

69. Communtation - अन्तवर्तन

70. Compensation - क्षतिपूर्ति

71. Computation — गणना

72. Concessionrate - रियायती दर

73. Condition - शर्त

74. Confidential - गोपनीय

75. Constitution - संविधान

76. Co&operation - सहकारिता

77. Co&ordination - एकीकरण

78. Corporation - निगम (महानगरपालिका)

79. Credit balance - आकलन शेष

80. Debenture - ऋणपत्र

81. Debit – ऋण

82. Debtor – ऋणी

83. Decline – अस्वीकार करना

84. Deposit- जमा करना

85. Designation – पदनाम

86. Despatch – प्रेषण

87. Dispatcher – संप्रेषक

88. Director – संचालक (निदेशक)

89. Disbursement – भुगतान

90. Duty allowance – कर्तव्य भत्ता

91. Editor – संपादक

92. Education department – शिक्षा विभाग

93. Endorsement – पृष्ठांकन

94. Export – निर्यात

95. Finance department – वित्त विभाग

96. Forwarded – अग्रप्रेषित

97. Fund – कोष निधि

98. Grant – अनुदान

99. Honourable -माननीय

100. Index – अनुक्रमणिका

101. Invoice – बीजक

102. Modification – संशोधन

103. Necessary action – आवश्यक कार्यवाही

104. Negotiable – क्रय-विक्रय योग्य

105. Nomination – मनोनयन

106. Notification – अधिसूचना

107. Ordinance – अध्यादेश

108. Recurring – आवर्तक

109. Transfer – स्थानांतरण

110. Vacancy –रिक्ति

111. अग्रिम – Advance

112. अनुभव – experience

113. अधीनस्थ कार्यालय – subordinative office

114. अधोहस्ताक्षरी – undersigned

115. अन्तरिक्ष मंत्रालय – sky ministry

116. अनुलग्नक – enclosure

117. अनुरोध – request

118. अधिकारी – officer

119. अनुवादक – translator

120. अनुशासित कार्रवाई – disciplinary action

121. अवर सविच – under secretary

122. आपत्तिजनक – objectionable

123. आदेश – order

124. आवेदन – application

125. उधार – dept

126. उपाधि – degree

127. उपसचिव – deputy secretary

128. कारोबार – business

129. कार्यालय – office

130. कार्रवाई – action

131. कार्मिक अधिकारी – personal officer

132. क्रयादेश पत्र – order letter

133. कार्यक्रम – agenda, programme

134. केन्द्र सरकार – central government

135. गृह मंत्रालय – home ministary

136. गैर हाजिर – absence

137. छुट्टी – holiday

138. जन संचार – mass communication

139. तत्काल – immediate

140. दैनिक – daily

141. धन्यवाद – thanks

142. नमूना – example

143. नियुक्ति – appointment

144. पता – address

145. पदनाम – designation

146. परिवीक्षा – probation

147. प्रतिलिपि – copy

148. प्रमाण पत्र – certificate

149. प्रार्थी – candidate

150. प्रतिष्ठित – established

151. प्रतियोगिता – competition

152. प्रतिशत – percentage

153. प्रांतीय सरकार – state government

154. परिपत्र – circular

155. प्रपत्र – forum

156. पत्रकारिता – journalism

157. प्रविष्टियाँ – entries

158. प्रकाशक – publisher

159. प्रति – copy

160. बट्टा – commission

161. बोरा – bag

162. प्रौद्योगिकी – technology

163. बिक्री प्रबंधन – sales manager

164. मानार्थ – complimentary

165. भुगतान – payment

166. भावात्मक एकता – national integrity

167. माल – goods

168. रसीद – receipt

169. रद्द – cancel

170. रविवार – sunday

171. संघ लोक सेवा आयोग – union public service commission

172. सचिवालय – secretariate

173. सदस्यता – membership

174. संबोधन – salutation

175. सन्दर्भ – reference

176. संपादक – editor

177. संस्थान – institution

178. स्पष्टीकरण – explanation

179. स्वस्थता प्रमाण पत्र – medical certificate

180. स्नातकोत्तर – post graduate

181. सूचना और प्रसारण – information and broad casting

182. साक्षात्कार – interview

183. सेवा – service

184. सूची पत्र – catlogue

Module IV

Translation

अनुवाद

एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में रूपांतर करना ही अनुवाद है। बहुतों ने अपने अपने ढंग से अनुवाद की परिभाषाएँ दी है। इनमें से हम समझ सकते हैं कि अनुवाद की प्रकृति के अनुसार इसके उद्देश्य भी विभिन्न हैं।

आजकल अनुवाद का महत्व और भी बढ़ गया है। अनुवाद को आज अनुसृजन के रूप में भी देख रहे हैं। इसलिए प्रतिभावान विद्यार्थी अनुवाद के जरिए शीघ्र ही रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए अनुवाद का अभ्यास करना भी जरूरी है। केन्द्र सरकार के समस्त कार्यासयों में तथा देशीयीकृत बैंकों में भाषांतरण और लिखित अनुवाद की वजह से अनेक नौकरियों के दरवाजे खुल गये हैं। अतः अनुवाद का नहत्व आज हर जगह दिखाई देता है।

अनुवाद अभ्यास (अंग्रेजी से हिन्दी में)

कुछ नमूने-

1. am extremely glad to note the progress of Hindi in South lndia. A common language for the whole of lndia is a necessity. There are many advantages in

making Hindi the National languge. There is no possibility of Hindi endangering the provincial languages. Hindi is a fine rope with which to bind the whole of lndia together. Some complaint that it is difficult to learn other languages. But there is really no difficulty in that. You can find many in Europe knowing four or five languages, besides their mother tongue.

हिन्दी अनुवाद-

दक्षिण भारत में हिन्दी की प्रगति देखकर मुझे अतीव प्रसन्नता होती है। समूचे भारत के लिए एक सामान्य भाषा की आवश्यकता है। हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने में अनेक सुविधाएँ हैं । हिन्दी के द्धारा प्रादेशिक भाषाओं की होने की कोई संभावना नहीं है। सारे भारत को एक डोरी में बाँधने के लिए हिन्दी एक सुन्दर सूत्र है। कुछ लोगों की शिकायत है कि दूसरी भाषाएँ सीखना मुश्किल है। परंतु वास्तव में इसमें कोई कठिनाई नहीं है। यूरोप में अपनी मातृभाषा के अलावा चार- पाँच भाषाएँ जाननेवाले लोगों को आप देख सकते हैं।

2. We have recently published some new and attractive books which are selling very well. We specially wish to bring to your notice Dubey's Economic and Commercial geography and A.N. Agarwal's' lntroduction to Economics' which are in great demand in your city and in which your local competitors

are doing good business. We are sending you our latest price- list to acquaint you with our new publications.

हम ने हाल ही में कुछ ऐसी नयी आकर्षक किताबों का प्रकाशन किया है जिनकी अच्छी बिक्री हो रही है। हम आप का ध्यान खासकर दूबे की ''इकनोमिक एण्ड कमेर्सल जोग्रफी'' और ए. एन अग्रवाल की '' इन्ट्रोडक्शन टु एकणोमिक्स'' की तरफ आकृष्ट करना चाहता हूँ। शहर में इन पुस्तकों की बड़ी माँग होती हैं और आपके स्थानीय परिद्धन्द्धी इन पर अच्छा व्यापार करते हैं। अपने नये प्रकाशान का परिचय देने के लिए हम अपनी नवीनतम मूल्य-सूची आप को नाम भेज रहे हैं।

3. The Taj Mahal is very famous building. It is one of the wonders of the world. It is situated at Agra on the right bank of the Yamuna. It was built by Shah Jahan. He built it in the memory of his dear wife Mumtaz Mahal. People come from far and and wide to see this historical building. It is very pleasant to see it in the rainy season when the scenery on all sides is very beautiful. Hundreds of years have passed but its beauty is the same, as it was, when it was built.

ताजमहल एक अत्यन्त प्रसिद्ध इमारत है। यह संसार के आश्चयों में से एक है। यह आगरा में यमुना के दक्षिणी तट पर स्थित है। इसका निर्माण शाहजहाँ ने करवाया था। अपनी प्रिय पत्नी मुमताज महल की स्मृति में उन्होंने इसे बनवाया था। इस ऐति

हासिक इमारत को देखने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं। वर्षा ऋतु में जब चारों ओर के दृश्य अतीव सुन्दर होते हैं तब इसे देखना अत्यन्त आनन्ददायक होता है। सैकड़ों वर्ष बीत गये, लेकिन इसका सौन्दर्य वैसा ही है जैसा कि इसका निर्माण हुआ था।

4. Now-a-days paper has become very costly. It costs three times more than before . Sometimes it is not even available. Therefore one has got to be very careful in using paper. Now I will tell you how careful Gandhiji was about paper. Now I will tell you how careful Gandhiji was about paper. Everyday he was getting hundreds of letters. Gandhiji did not throw away such letters. He wrote the draft of his letters on the back. Sometimes he used to write articles for his 'Harijan' on them. He seldom bought paper for his use.

आजकल कागज बहुत महँगा हो गया है। इसका दाम पहले की अपेक्षा तीन गुना लगता है। कभी-कभी मिलता भी नहीं। इसलिए हर किसी को कागज के उपयोग में सावधान रहना चाहिए। अब मैं बताऊँगा कि काघज के विषय में गाँधीजी कितने सावधान थे। प्रातदिन उन्हें सैकड़ों पत्र मिलते थे। गाँधीजी उन पत्रों को फेंकते नहीं थे। वे उनकी पीठ पर अपने पत्रों के मसौदे लिखते थे। कभी-कभी वे उन पर अपने 'हरिजन' के लिए लेख भी लिखते थे। वे अपने उपयोग के लिए कागज विरले हो खरीदते थे।

5. When a new customer wants credit, he is requested to furnish trade references.

The letter asking for reference should be written in a natural polite manner, stating that this inquiry is a matter of routine and custom. Nothing should be written to would the self respect of the correspondent lest he might be offended and be lost as a customer.

जब कोई नया ग्राहक माल उधार माँगता है ता उससं व्यापारिक संदर्भ देने की प्रार्थना की जाती है। संदर्भ माँगते हुए जो पत्र लिखा जाता है वह स्वाभाविक और नम्रतापूर्वक होना चाहिए और उसमें यह बताना चाहिए कि यह पूछताछ प्रचलित क्रम और परिपाटी के अनुसार होने वाला कार्य है। ऐसी कोई बात नहीं लिखनी चाहिए कि पाने वाले के आत्म सम्मान पर आघात लगे। इस पर ध्यान न देने पर उसके अप्रसन्न होने तथा ग्राहक क रुप में उलको खो जाने की भी संभावना है।

6. We regret to inform you that, inspite of our re minders, we have failed to receive the goods in time. As our customer, who ordered these goods, has now purchased them from elsewhere, because of our failure to supply him goods in time, we have very reluctantly to cancel the order.

आपको यह सूचित करने में हमें खेद होता है कि अनुस्मारक भेजने पर भी माल समय पर प्राप्त नहीं हुआ है। क्रयादेश की पूर्ति समय पर करने में हमारी पराजय हो जाने से हमारे ग्राहकों ने और कहीं से माल खरीदा है। इसलिए हम विवश होकर क्रयादश रद्द करते हैं।

7. Discipline is very essential in every walk of life. Discipline is the soul of military life. without discipline an army is no better than a crowd. It is the first thing that needed for maintaining the harmony and concord in a family. It is equally necessary in mainaining peace and harmonious relation in society or in a nation. Without discipline we are no better than brutes. lf there is no discipline in God's creation, chaotic conditions will prevail and this universe would come to topsy-turvy in time. 'Learn to obey, if you wish to command', thus goes to proverbs. there is much truth in this proverb 'Child is the father of man' so says wordsworth. Childhood is the part of man's life when it can easily be moulded. If a student forms disciplined habits in his school career it will have a good effect upon his future life.

जीवन के हर क्षेत्र में अनुशासन अत्यन्त आवश्यक है। अनुशासन सैनिक जीवन की आत्मा है। अनुशासन- हीन सेना भीड़ से भी बेहतर नहीं। वह परिवार की एकता और सहमति बनाये रखने का पहला साधन है। समाज या राष्ट्र में शांति और ऐक्यापूर्ण लंबन्ध को बनाये रखने के लिए भी अनुशासन समान रूप से आवश्यक है। अनुशासन के बिना हम असभ्यों से बेहतर नहीं होते। ईश्वर की सृष्टि से यदि अनुशासन नहीं रहा तो अस्तव्यस्तता कायम

रहेगा और ब्रझांड शीघ्र ही प्रलय में डूब जायेगा। एक प्राचीन कहावत है- अगर आज्ञा देना चाहो तो स्वयं आज्ञा मानना सीखो। इस कहावत में बहुत सत्य है। बच्चा आदमी का पिता है वर्डसवर्त ऐसा कहते हैं। बचपन आदमी के जीवन का ऐसा समय है जबकि उसको आसानी से योग्यरूप दिया जा सकता है। यदि एक विद्यार्थी अपने अध्ययन काल में अनुशासनपूर्ण आदतें डालें तो उसके भावि-जीवन पर उनका अच्छा प्रभाव पड़ेगा।

8. Means of transport and communication are very essential for the smooth working and the further development that “If agriculture and industry are the body and the bones of a national Organism, communications are its nerves.” kipling goes further and says: “Transport is Civilization.”

The importance of well- developed means of transport and communnication is all the greater ina country like judice which is sub-continental in size, has long distance to cover a large population to be served. Agriculture, industry, trade or any other economic activity depends in a very large measure, on the development of the means of transport and communication.

देश के सुगमतापूर्ण संचालन तथा आर्थिक जीवन की प्रगति को और बढ़ाने के लिए संचार और परिवहन के साधन अत्यन्त आवश्यक हैं। किप्लिंग के अनुसार- “ यह बिलकुल सच है कि

खेती और उद्योग देश के जीवधारियों के शरीर और हडिडयाँ हैं तो संचार उसकी नसें हैं। वे फिर कहते हैं कि परिवहन सभ्यता है।''

भारत जैसे देश में, संचार और परिवहन के पूरी तरह से उन्नत साधनों का सर्वाधिक महत्व है क्योंकि भारत एक अर्ध महाद्धीप के आकार का है जिसमें बहुत अधिक दूरी तय करनी है, प्रगति प्राप्त करने के लिए अनेक अविकसित प्रदेश हैं और जहाँ असंख्य लोगों की सेवा भी करनी है। खेती, व्यवसाय, व्यापार या कोई दूसरा आर्थिक काम हो यातायात और संचार के साधनों के साधनों के विकास पर निर्मर रहता है।

9. Today is the new year's day. The year which was till yesterday has gone away for ever. It will never come back now. The current of time is incessant and everlasting. The previous year has gone. The new year has started now. But the joint in the middle is not visible. The flow of time is just like the current of river. The river flows and vanishes in the endless ocean, even then it goes on flowing. The previous year has ended and vanished in the infinite time. Day, night, fortnight, month and year are the measures. They are to measure the eternal time. Day and night can be short or long, but the thing to be measured is neither short nor long. The time is infinite and everlasting.

आज नये साल का पहला दिन है। जो वर्ष कल तक था वह सदा के लिए चला है। अब वह वापस नहीं आएगा। वर्तमान

(काल) अविच्छिन्न एवं अनन्त है। समय की प्रवाह अजस्र है। पिछला साल बीत गया। अब नया साल चालू हुआ। लेकिन बीच का वह जोड़ दिखाई नहीं पड़ता है। समय का प्रवाह नदी के प्रवाह के जैसे है। नदी बहकर अनन्त समुद्र में विलीन होती है, फिर भी बहती रहती है। साल समाप्त होकर अनन्त काल में विलीन हो गया और नया साल शुरू हो गया। दिन-रात, पक्ष, मास और साल तो माप हैं। समय के नापने के पैमाने हैं। दिन और रात छोटे-बड़े हो सकते हैं अर्थात् माप छोटा-बड़ा हो सकता है लेकिन मापी जानेवाली चीज तो छोटी-बड़ी नहीं होती है। समय अनन्त है, अक्षय है।

10. Vidyasagar was very generous and charitable man. From his earliest years he helped the poor and needy to the utmost of his power. As a boy at school, he often gave the food he had to eat to another boy who had none. If one off his school-fellows fell ill little Eashwar would go to his house sit by his bed and nurse him. His name became a household word in Bengal. Rich and poor, high and low, all loved him alike. No begger ever asked him for relief in vain.

विद्यासागर एक उदार एवं दानशील व्यक्ति थे। बचपन से ही उन्होंने अपनी संपूर्ण शक्ति से गरीबों और जरूरतमन्दें की सहयता की है। जब वे एक स्कूली बालक थे तब हमेशा अपना भोजन किसी दूसरे को दे देते थे जिसके पास भोजन नहीं था। अगर अपना कोई सहपाठी बीमार हुआ तो छोटा ईश्धर उसके घर जाकर उनका नाम कूलदेवता का सा बन गया। अमीर-गरीब, उच्च- नीच

सभी समान रूप से उन्हें प्यार किया करते। कभी किसी भिक्षुक ने उनसे व्यर्थ सहायता नहीं माँगी थी।

11. Mahatma Gandhi was the great man of his time, he was born at Porbandar in Gujarat on 2 Oct. 1869. His Father was a minister in a state and his mother was an ideal woman. After his education in India he went to England to study law. After qualifying as a barrister from there he start practice in South Africa. But soon he started the Satyagrah movement to improve the miserable conditions of the Indians living there. After Gandhi- Smuts agreement he returned to India. He regarded truth and noon-violence as best weapons for achieving the freedom of India. Therefore he started noon- cooperation and satyagraha movements. In the end truth and non-violence were victorious and the British empire had to admit defeat. India became free.

महात्मा गांधी अपने समय के सबसे महान् पुरुष थे। उनका जन्म २ अक्टूबर १८६९ ई. में गुजरात के पोरबन्दर नाम के शहर में हुआ था। उनके पिता एक रियासत के दीवान थे और उनकी माता एक आदर्श स्त्री थीं। भारत में शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् वे वकालत पढ़ने के लिए इंग्लैंड गये। वहां से बैरिस्टर बनकर वापिस आने के बाद उन्होंने आरम्भ में दक्षिणी अफ्रीका में

वकालत आरंभ की। परंतु शीघ्र ही वहां रहने वाले भारतीयों की दीन-दशा सुधारने के लिए उन्होंने वहां सत्याग्रह आन्दोलन प्रारंभ किया। गांधी-स्मटस समझौता हो जाने पर वे वहां से भारत लौट आए। भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए भी उन्होंने सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों को ही सर्वोपरि हथियार माना। अतः उन्होंने असहयोग आन्दोलन तथा सत्याग्रह आन्दोलन आरंभ किये। अन्त में सत्य और अहिंसा की विजय हुई और ब्रिटिश साम्राज्य को अपनी हार स्वीकार करनी पड़ी। भारत स्वतंत्र हो गया।

12. So people have to be educated 'to walk upon the earth like men' and to make the next step forward. We find here and there some people who were very warlike once upon a time but have now grown up enough to be mild and peace-loving. Such, for instance, are the Swedes and the Swiss. It is necessary that people all over the world should become educated like that. If they don't learn their lessons in time, they will go on having one terrible war after another.

तात्पर्य यह है कि लोगों को 'मनुष्य की तरह घरती पर चलने' और अगला कदम बढ़ाने की शिक्षा देनी होगी। हम प्रायः यहाँ-वहाँ देखते हैं कि जो लोग कभी बहुत जुझारू और युद्धप्रिय थे, वे अब बहुत विनम्र और शान्तिप्रिय बन गए हैं। स्वीडन और स्विट्जरलेड इसके उदाहरण है। यह बहुत आवश्यक है कि संसार-

भर में लोगों को इस प्रकार से शिक्षित किया जाए। यदि वे ठीक समय पर सीख ग्रहण नहीं करेगे तो उन्हें निरन्तर एक के बाद दूसरे भीषण युद्ध का सामना करते रहना होगा।

13. Now, there is no need to get despondent at the fact that human beings back the intelligence as yet to know their real interests. We must not forget that the human race is still very, very young. C.E.M. Joad, in his delightful little *Story of Civilization*, has computed that if we reckon the whole past of living creatures on the earth as one hundred years, the entire past of Man works out at one month, and during that month there has been civilization for only seven or eight hours. He also points out that while there has been little time for us to lean things so far, there will be oceans of time in which to learn better. Because, while Man's civilized past has lasted seven or eight hours, his future (till the sun grows too cold or too hot to maintain life on the earth) is estimated on the same scale at a hundred thousand years!

अब, इस बात से निराश होने की आवश्यकता नहीं, कि मानव-समुदाय में अभी तक अपने वास्तविक हितों को पहचानने की

योग्यता की कमी है। हमें यह भूलना नहीं चाहिए कि मानव-जाति अभी बहुत-बहुत अविकसित है। सी.ई.एम. जोड ने 'सभ्यता की कहानी' नामक अपनी एक रोचक लघु कथा में इसका आकलन करते हुए बताया है कि यदि हम धरती पर प्राणी-जगत के सम्पूर्ण अतीत की अवधि एक सो वर्ष मानें तो उसमें से मानव-विकास की अवधि केवल एक महीना ही निकलेगी और उस एक महीने में से सभ्यता के नाम पर केवल सातक या आठ घंटे ही होंगे। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि अब तक हमें कुछ सीखने के लिए बहुत ही कम समय मिला है तथा हमें और अधिक सीखने के लिए अपार समय की आवश्यकता है। क्योंकि, मानव-सभ्यता का पिछला इतिहास यदि केवल सात-आठ घंटे तक सीमित है तो, इसी अनुपात से, उसका भविष्य (जब तक सूर्य एकदम शीतल या एकदम गर्म होकर धरती पर जीवन को असंभव न कर दे) सैकड़ों-हज़ारों वर्ष का माना जा सकता है।

14. All Pharmaceutical manufacturers, wholesalers and chemists throughout the country will remain closed on 26th August, 1991.

We sincerely apologise to consumers for the inconvenience. The objective of the bandh is to focus public attention on the developing crisis in the manufacture and distribution of essential medicines. All our costs of manufacturing and distribution have soared. Production and distribution of

essential medicines have become impractical and unviable. Government's unwarranted insistence on employing pharmacists at all retail chemists is hampering service to consumers.

All avenues for resolving the problem with the Government have been exhausted. No action has been taken by the Government on numerous memoranda and representations.

For an Industry and Trade totally committed to serving the health needs of the people, it has been very difficult to take such a painful decision. However, we have not been left with any alternative.

This step has been deemed necessary to serve your interest better in future to enable the industry and the Trade to continue to manufacture and make available essential medicines of world class quality at fair prices throughout the country.

२६ अगस्त, १९९१ को देश भर के समस्त औषधि निर्माता, थोक विक्रेता तथा औषधि विक्रेता (केमिस्ट्स) अपने प्रतिष्ठान बन्द रखेंगे।

हम उपभोक्ताओं को होने वाली असुविधा के लिए विनम्र क्षमाप्रार्थी है। इस बन्द का उद्देश्य आवश्यक औषधियों के उत्पादन

तथा वितरण मं गहराते तथा बढ़ते जा रहे संकट के संदर्भ में जनता का ध्यान आकर्षित करना है। औषधि उत्पादन तथा वितरण की हमार लागतों में बेतहाशा वृद्धि हो चुकी है। आवश्यक औषधियों का उत्पादन तथा वितरण अव्यावहारिक तथा असंगत एव असंभाव्य हो गया है। सरकार द्वारा समस्त खुदरा औषधि-विक्रेताओं के यहाँ 'फार्मासिस्ट्स' को ही नियुक्त किए जाने का अनावश्यक दबाव डाले जाने से उपभोक्ताओं को बेहतर सेवाएँ मुहैया कर पाने में मुश्किलें बढ़ रही हैं।

सरकार के उपेक्षापूर्ण रवैए के चलते समस्या-समाधान के सभी रास्ते बन्द हो चुके हैं। ढेहों ज्ञापन प्रस्तुत किए आने तथा अनेक बार प्रतिनिधित्व किए जाने के बावजूद भी सरकार ने कोई कारवाई करना, कोई कदम उठाना आवश्यक नहीं समक्ता है।

एक ऐसे उद्योग तथा व्यापार के लिए जो जनता की स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए परिपूर्णतः समर्थित है, राष्ट्रव्यापी बन्द आयोजित करने का निर्णय लेना निःसंदेह अत्यधिक पीड़ादायक और दुःखद है। हम विवश है। हमारे सम्मुख कोई और विकल्प भी तो शेष नहीं रह गए थे।

यह कदम, भविष्य में आपके हितों की बेहतर सुरक्षार्थ आवश्यक समक्ता गया है, जिससे देश का औषधि उद्योग तथा व्यापर विश्व-स्तर की गुणवत्ता वाली आवश्यक औषधियों का उत्पादन जारी रखने तथा ऐसी औषधियाँ देश भर में उचित मूल्यों पर सहज सुलभ करा सकने में समर्थ हो सके।

15. The stream of national consciousness flows incessantly. As the Ganga emerging in the Himalaya takes many courses and forms and fulfils the

spiritual and physical needs to the people of India, similarly the thoughts of the great sages living in the caves of the Himalaya have always remained the source of inspiration for the people of his country, acting as a unifying influence in many ways. Ganga is one but has many names. Whether we call it Mandakini, Bhagirathee or by any other names, it is the same, its sacred waters acting as the life-line and giving solace of the people. For all places, races, castes, villages and towns of the country the Ganga has been the loving and caring mother throughout the ages. The same conception of the land of our birth as our mother has always been the mainstay of national consciousness for the Indians.

राष्ट्रीय चेतना का प्रवाह अविराम गति से बहता रहता है। जिस प्रकार हिमालय से निकलने वाली गंगा अनेक मार्ग और रूप ग्रहण करती है तथा भारत की लोगों की आध्यात्मिक और शारीरिकत आवश्यकताओं को पूरा करती है; उसी प्रकार हिमालय की कन्दराओं में रहने वाले मनीषियों के विचार उनके देशवासियों को अनेक रूपों में ऐक्य का सन्देश देने वाले प्रेरणा-स्रोत रहे हैं। गंगा एक है, किन्तु उसके नाम अनेक है। चाहे उसे हम मंदाकिनी कहें या भागीरथी, अथवा किसी अन्य नाम से पुकारें, वह है एक ही। उसका पवित्र जल लोगों को तृप्ति प्रदान करने वाली संजीवनी

है। गंगा देश के सभी स्थानों, समस्त वर्गों, जातियों, गाँवों और शहरों के निवासियों का माँ के समान पालन-पोषण करती है। अपनी जन्मभूमि के प्रति भी यही मातृत्व-भावना भारतीयों की राष्ट्रीय चेतना की मूल् आधार है।

16. We often here people say that most human beings have not yet evolved or grown up enough to stick to truth or non-violence. That is very true. Somebody has described the people of our time as possessing the powers of gods and the minds of school-children. Which only shows how grown-ups will put on airs? A Russian peasant put the same idea much better when he hold the writer, Maxim Gorki: 'You can fly in the air like birds and swim in the sea like fish, but you don't know how to walk upon the earth like men.'

हम, लोगों को प्रायः यह कहते सुनते है कि अधिकांश मनुष्यों में अभी तक सत्य और अहिंसा पर अडिग रहने की क्षमता पूरी तरह विकसित नहीं हो पाई है। यह बिल्कुल सच है। किसी ने कहा है कि हमारे समय के लोगों में शक्तियाँ तो देवताओं जैसी हैं, परन्तु उनके दिमाग स्कूली बच्चों के समान हैं। इससे पता चल जाता है कि कैस विकसित लोग सामने लाए जाएँगे। एक रूसी किसान ने इसी बात को अधिक अच्छी तरह स्पष्ट किया जब उसने साहित्यकार मैक्सिम गोर्की को बताया- 'आप हवा में पंछियों की

तरह उड़ सकते हैं, समुद्र में मछलियों की तरह तैर सकते है, लेकिन आप मनुष्य की तरह धरती पर चलना नहीं जानते!'

17. Why do we laugh? It is just a long nose or a bulging belly we laugh at or the sight of somebody slipping over a banana skin? What's humour and what is humorous? What is sense of humour? Is it laughing at others or laughing at yourself? Does prosperity bring laughter in your life or irony and paradoxes. A thousand question boom before we smile, grin, laugh or break into peals of laughter.

हम क्यों हँसते हैं? क्या किसी की लम्बी नाक, बढ़ी हुई तोंद अथवा किसी को केले के छिलके पर फिसलते देखकर? हँसना है क्या? हास्यास्पद अथवा विनोदशील होने का क्या अभिप्राय है- दूसरों पर हँसना या अपने आप पर? इस हास्य-विनोद का मूल आधार क्या जीवन की समृद्धता है या व्यंग्य अथवा विरोधाभास है? हमारे मुस्कराने, दाँत निकालने, खिलखिलाने या ठहाका लगाने से पहले ऐसे हज़ारों प्रश्न अनायास सामने आ जाते हैं।

18. Malaviyaji was know in India and abroad as silver tongued orator. He had a grant command over Hindi, Sanskrit, Urdu and English. He could speak in all these languages with ease, fluency, effectiveness

pronounciation, proper intonation and chaste annunciation. It was a pleasure to here him speak in any one of the above languages. He possessed the matchless quality of moving his audience to tears or mirth in the twinkling of an eye.

मालवीय जी भारत तथा विदेशों में एक प्रभावशाली वक्ता के रूप में विख्यात थे। हिन्दी, संस्कृत, उर्दू और अंग्रेज़ी पर उनका पूरा अधिकार था। वे इन सबी भाषाओं में बड़ी सहजता, धाराप्रवाह-शैली, प्रभविष्णुता, विचारशीलता, सुस्पष्टता, उच्चारण-शुद्धता, उपयुक्त लयबद्धता एवं सटीकता के साथ बोल सकते थे। इनमें से किसी भी भाषा में उन्हें सुनना आनन्ददायक था। उनमें श्रोताओं को क्षण भर में प्रभावित करके द्रवित या गद्‌गद कर देने की अपूर्व क्षमता थी।

अभ्यासार्थ गद्यांश

1. Travelling is an essential part of education. Through books we read we get only theoretical knowledge, but practical knowledge is obtained only by travelling .We come to know of different people with different manners and customs. We can see their mode of living and dress. We can hear their different languages. Travelling develops our knowledge and outlook. We can improve ourselves by adopting the good methods followed by various nations. It really helps the advancement of civilization. All people cannot undertake journey but they can learn about the unknown places from books written by travellers. If the travelers had not described their journeys and given an account of the new places they visited , we would not have known such useful information-

(theoretical & IS- सैद्धांतिक, practical- ´यावहारिक, knowledge- ज्ञान, manners and customs,- आचार- विचार, outlook- दृष्टिकोण, adopt-

अनुकरण करना, give an account of- विवरण देना, advancement- उन्नति civilization- संस्कृति)

2. Soon after our first arrest in December 1921 the police started paying frequent visits to Anand Bhavan, our house in Allahabad. They came to realize the fines which had been imposed on father and me. It was the congress policy not to pay fines. So the police came day after day and attached. They carried away bits of furniture. Indira, my four year old daughter, was greatly annoyed at this continuous process of despoliation and protested to the police and expressed her strong displeasure. I am afraid those early impressions are likely to colour her future views about the police force generally.

(arrest- गिरफ्तारी, pay frequent visit- नित्य आना-जाना, realize to fine- जुर्माना वसूल करना, policy- नीति, ड्ढद्यद्यड्ढड़ण- जब्त, to get annoyed- झुँझलाना, dispoilation- लूट, early impressions- प्रारंभिक धारणएँ)

3. No person can be happy without friends. The heart is formed for love, and cannot be happy without the opportunity of

giving affection. But you cannot receive affection unless you will give it. You cannot find others to love you unless you will also love them. Love is only to be obtainedby giving cheerful and obliging disposition. You cannot be happy without it. If your companions do not love you, it is your own fault. They cannot help loving, if you be kind and friendly. If you are not loved, it is good evidence that you do not deserve to be loved.

(affection – प्रेम, ममता, cheerful- प्रसन्न, obliging disposition - सुजनता पूर्ण स्वभाव, cannot help loving- प्यार किये बिना रह सकता, friendly- मित्रतापूर्ण, evidence- प्रमाण, deserve to be loved- प्यार किये जाने योग्य, companions- सहचर)

4. The country we live in is known as Bharatvarsh, Hindustan or Hind. The most ancient name of our land is Bharatvarsh. Our country gets this name because of its ancient ruler named Bharat. It is said that he was the first to rule over this land. The name Hindustan and Hind wer given by foreigners.

Many people came into our country. But after they settled here, they became its citizens. Many of these came to India from

the north-west after crossing the river ‘Sindhu’. To them the river Sindhu was the boundary of this country. In the countries north-west of India Sindhu is known as Hind. Hence after the name of Sindhu, this country came to be called Hind first and Hindustan later. The people of this country came to be known as ‘Hindis’ or ‘Hindus’.

(ancient- प्राचीन, ruler- शासक, citizens- नागरिक, to settle- बसना, north-west- उत्तर- पश्चिम, boundary- सीमा, after the name of Sindhu- सिन्धु के नाम पर)

5. Science is a divine gift to man. It has enabled man to understand men and things. It has given him the faculty of reasoning. It has saved man from superstitions.it has given him a clear vision. It has taught him as how to take the five elements under his control. He has gradually improved his abilities and now is able to control nature. He has learnt as to know to make use of nature and has become the master of nature. Today he is sailing on the sea and flying on the sky. He has invented different kinds of machines which are very useful. He has conquered

distance and time and is able to bring the whole world together.

(science- विज्ञान, divine gift- दैवी देन, faculty of reasoning- युक्तियुक्त चिन्त की शक्ति, superstitions- अन्धविश्वास, vision- दृष्टि, five elements- पंचतत्व, gradually- धीरे-धीरे, sailing on the see- समुद्र, में यात्रा करना, to invent- आविष्कार करना, to conquer- जीतना)

6. Scholars of ancient History are of opinion that india had trade relations with foreign countries even before Christ. According to some scholars , the renownd Sanskrit poet Kalidasa flourished one hundred years before Christ. From evidence of his world famous drama 'Abhijnanashakuntalam', we come to know that India imported silk from China. Our export trade in those old days was fetching enormous wealth of gold and silver. It is why India was known to the foreigners as a 'bird of gold' exporting cotton cloths to countries like Persia, Arabia, and Egypt. When the English peple came here, they found that our people could prepare the finest linen in the world.

(opinion- मत, trade relation- व्यापारिक संबन्ध, according to- के अनुसार, renowned- प्रसिद्ध, flourished- विद्यमान थे, evidence- प्रमाण, to import- आयात करना, export- निर्यात, Persia & Egypt- मिस्र, finest- बहुत महीन, linen- कपड़ा)

7. There are many aspects of modern University Education about which constant thinking is necessary. We live in a rapidly changing world. We are actually living through a revolution. We have abandoned many of the traditions and habit of thought by which we lived. We were a caste-ridden society. We have decided, now to be a casteless society. This is the revolution. For the first time in Indian history, this has happened. It is necessary that the Universities in India should rise to this new occasion. Universities have to make this revolution fruitful.

(university education, विश्वविद्यालयीन शिक्षा, constant thinking, - अनवरत चिन्तन, rapidly, तेजी से, revolution, परिवर्तन, to abandon- त्याग करना, tradition, परंपरा, habit of thought, चिन्तन क्रम, caste-ridden, जातिबद्ध, to rise the occasion,

परिस्थिति के अनुसार बदलना, to take initiative, पहल करना, fruitful, फलदायक)

8. English is the highly developed language in the world and it is known as throughtout the world. It has the wide literature in the world. Great poets like Shakespeare, Milton , Wordsworth etc. produced great literature. It has enjoyed the honour of being the official language and medium of instruction in many countries like India. As a matter of fact, it is the language of educated population. It has contributed its share to the development of many modern languages. Today almost all the authoritative books in Science, History and Art are available in English.

(developed- विकसित, wide- विशाल, official language- राजभाषा, medium of instruction-शिक्षा का माध्यम, as a matter of fact-वस्तुतरू, educated population- शिक्षित जनता, to contribute -योगदान करना, authoritative - आधिकारिक)

9.Advertising has been differently defined by different people. It is said to be nothing put purely and simply salesman ship in print. Dr.Jones defines it as a sort of machine made, mass production method of

selling, which supplements the voice and personality of the individual salesman, much as in manufacturing the machine suppliments the hands of the craftsman. Simpy stated advertising is the art of influencing human action, the awakening of the desire to posses, and possess pour product.

10. Mahatma Buddha was born 2500 years ago. He was a great preacher of non-violence. He said that it is our duty to be kind to all. One day he saw an old man. Then he saw a dead man. At this he was pained at heart. He left his house and went to jungles to do penance. He remained there for six years and at last one day he got what he wanted. From that day, he was called 'Buddha'. He also preached a new religion called 'Buddhism'.

11. Jiddu Krishnamurti was born in India in 1895 and ,at the age of thirteen , taken up by the 'Theosophical Society', which considered him to be the vehicle for the "world teacher" whose advent it had been proclaiming. Krishnamurti was soon to emerge as a powerful, uncompromising and unclassifiable teacher, whose talks and writing were not linked to any specific

religion and were neither of the East nor the West but for the whole world. Firmly repudiating the messianic image , in 1929 he dramatically dissolved the large and monied organization that had been built around him, and declared truth to be “ a pathless land” which could not be approached by any formalized religion, philosophy, or sect. sect.

12. If you are not in communion with anything, you are a dead human being. You have to be in communion with river, with the birds, with the trees with the extraordinary light of the evening, the light of the morning on the water; you have to be in communion with your neighbour, with your wife, with your children, with your husband. I mean by communion non-interference of the past, so that you look at everything afresh , anew - and that’s the only way to be in communion with something, so that you die to everything of yesterday. And is it possible? One has yo find this out, not ask “ How am I to do it?” this shows their mentality; they have not understood, but they only want to achieve a result.

13. What is this education doing actually? Is it really helping man or his

children to become more concerned, more gentle, or generous; is it helping him not to go back to the old pattern, the old ugliness and naughtiness of this world? If he is really concerned as he must be, then he has to help the student to find out his relationship to the world, not to the world of imagination or romantic sentimentality, but to the actual world of nature, to the desert , the jungle, or the few trees that surround him, and to the animals of the world. Animals fortunately are not nationalistic; they hunt only to survive. If the educator and the student lose their relationship to nature the trees, to the rolling sea, each will certainly lose his relationship with man.

14. When the mind realize the limitation, the narrowness, the finiteness of thought, then only can it ask question: what is truth? Is this clear? I do not accept truth given by philosophers-that's their game. Philosophy means love of truth, not love of thought. So there is no authority -Plato, Socrates, Buddha. And Christianity has not gone into this very deeply. It has played with words and symbols, made a parody of suffering and all the rest of it. So the mind rejects all that.

15.We never see the world as a whole because we are so fragmented. We are so terribly limited, so petty. And we never have this feeling of wholeness, where the things of the sea, of the earth and the sky, nature, the universe, are part of us. Not imagined- you can go off in some kind of fanciful imagination and imagine that we are the universe, then you become cuckoo! But if you break down this small, self-centred interest, and have nothing of that, then from there you can move infinitely.

MODEL QUESTION PAPER

II[nd] SEMESTER BCom DEGREE EXAMINATION

COMMON ADDITIONAL LANGUAGE COURSE
IN HINDI
HI N2A 08 (2)
POETRY, CORRESPONDENCE AND TRANSLATION

Time : 2 ½ hours Maximum: 80 Marks

I. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं प्रश्नों के उत्तर लिखिए। प्रत्येक प्रश्न का अंक 2 है। आपको अधिकतम 25 अंक मिल सकते है।

(25 marks)

1. कबीर ने गुरु के बारे में क्या कहा?
2. सूर का सख्य भक्ति कैसी है?
3. नौका विहार किसकी रचना है और उसमें किसका वर्णन है?
4. जुही की कली में किनका वर्णन है?
5. नाच कविता जीवन के किस दृश्य को दिखाता है?
6. मौसियाँ में कवयित्री किसकी ओर इशारा करती है?
7. बेटी में कवयित्री क्या आह्वान करती है?
8. कुआँ क्यों प्यासा है?
9. गगन गिल के अनुसार यात्राएँ कैसे शुरू होती है?
10. मुक्ति कविता का मुख्य विषय?

11. वैयक्तिक पत्र क्या है?
12. सरकारी पत्र किसे कहते है?
13. हिन्दी साहित्य में अज्ञेय का क्या स्थान है?
14. ज़िन्दगी फिर से शुरु होने का विचार मुक्ति में क्यों प्रकटा है?
15. निम्नलिखित शब्दों का पारिभाषिक शब्द लिखिए।

1. Abstract 2. Act

3. Capital 4. Allowance

II. **निम्नलिकित प्रश्नों में से किन्हीं प्रश्नों के उत्तर लिखिए। प्रत्येक प्रश्न का अंक 5 है। आपको अधिकतम 35 अंक मिल सकते हैं।**

(35 marks)

16. कबीर की गुरु महिमा
17. पत्रलेखन के प्रकार
18. नाच का प्रतिपाद्य
19. मौसियाँ कविता का संक्षिप्त वर्णन
20. नौका विहार का काव्यगत सौन्दर्य
21. बेटी कविता का वर्णन
22. व्यावसायिक पत्रलेखन की विशेषताएँ
23. प्यासा कुआ का वर्णन

III. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखिए। प्रत्येक प्रश्न का अंक 10 है।

(20 marks)

24. जुही की कली का काव्यगत विशेषताएँ
25. नाच कविता के आधार पर अज्ञेय की काव्य कला।
26. लिपिक पद के लिए आवेदन पत्र तैयार कीजिए।
27. अनुवाद के लिए एक अनुच्छेद।

****